गर्दिश-ए-अंजुम

"शब्दों की उड़ान, दिलों की पहचान
एक एहसास, जो सबका है"

श्याम सुंदर सैनी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Sham Sunder Sethi 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

For permissions requests or inquiries regarding this publication, please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7825-617-2

Typesetting: Namrata Saini

First Edition: June 2026

Dedication

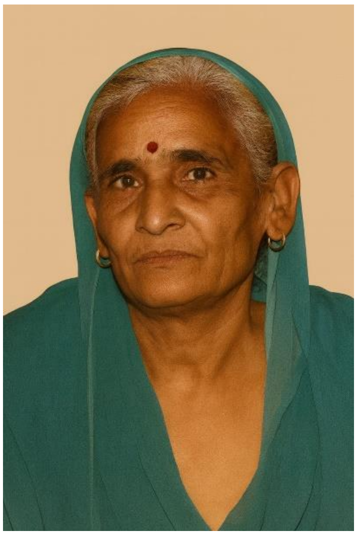

To my mother

Preface

हमारे पिताजी एक बहुत ही अच्छे कवि हैं। वे अपनी कविताओं के माध्यम से अपने मन के भावों को सुंदर शब्दों में व्यक्त करते हैं। उनकी कविताएँ दिल को छू लेने वाली, प्रेरणादायक और विचारों से भरपूर होती हैं। हमें गर्व है कि हमारे पिताजी न केवल एक अच्छे पिता हैं, बल्कि एक प्रतिभाशाली लेखक और कवि भी हैं। उनकी लेखनी से हमें सीख, प्रेरणा और जीवन के सुंदर मूल्य मिलते हैं।

एक बार फिर आजा कान्हा
विराट रूप दिखा जा कान्हा
आओ हरि पुनि माखन चाखो
आज लाज भारत की राखो
पाँचाली करती पुन: विलाप
महासभा में रही भोग संताप
चारों ओर द्रौपदियां हैं अनाड़ी
दुशासन खींच रहे हैं साड़ी
अन्याय साथ लेकर खाली
कौरव हुए पुन: बलशाली
गांधार, मद्रदेश, अंग, वैशाली
बढ़ रहे जैसे आंधी काली
मत्स्य, भोज,अंधक, कुक्कुर
देने चले पांडु पुत्रों को टक्कर
उसपर यह क्या किया कान्हा
अक्षौहिणी सेना भी दे डाली
युद्ध से स्वंय कोई नाता न रखा
अस्त्र-शस्त्र पे हाथा न रखा
चतुराई से बड़ी मात्र दर्शक बने
स्वंय पार्थ के मार्ग दर्शक बने
अर्जुन की फिर सुनो पुकार
सकल जगत पर करो उपकार
मन मे मोह माया का गर्भाधान
आप ही करो शंका समाधान
फैलाकर फिर गीता का ज्ञान

मानव भर का करो कल्याण
बन रहे जो कष्टों का कारण
विराट रूप फिर हरि दिखावो
धनंजय को युग साक्षी बनावो
पुकार रहे पुन: पाँडव मोहन
धर्म ध्वज का करो आरोहण
चारों ओर मचा हुआ कोहराम
असहाय कुरलाते त्राहिमाम
करो दुष्ट जनों का संहार
हो भूधरा पे शान्ति विस्तार
'अंजुम '

*****

दुनिया की साजिशों का तो कोई गम नहीं
देखे जो भीड़ में अपने तो ऑसू निकल पड़े
हंसने की हसरतों पर बेहद हकदार थे हम
हैरत हुई साथ ग़मों के काफिले ही चल पड़े
बेशक तेरा मुस्तकबिल अव्वल था मेरे लिए
दोयम रहकर हम ख़ुशी से नीचे फिसल पड़े
दर्जा ए हरारत अब तो कम हुआ जाता है
इल्म नहीं कि कब जिस्म शोलों से जल पड़े
'अंजुम '

*****

हर अँधेरे में उम्मीदों का उजाला रखना,
ज़िंदगी है तो दिलों में हौसला रखना।
चल पड़े हो तो थकावट से न घबराना,
हर कदम पर अपने जज़्बों को पाला रखना।
मुस्कुराकर ही कठिन राहों को जीता जाता,
होंठ पर चाहे दर्द हो, पर निवाला रखना।
जो भी आए फ़सले-ग़म, डट के गुजर जाएँगी,
बस यक़ीं का अपने अंदर इक हवाला रखना।
ज़िंदगी रूठे तो समझा-बुझा के मना लेना,
और दिल में हर किसी के लिए उजाला रखना।
क़द्र करो उन लम्हों की जो मिलते जाएँ,
हर धड़कन में मोहब्बत का रसाला रखना।
'अंजुम '

*****

खूब ख्यालों में घूमा हूँ
सपनों में भी डूबा रहा
कभी चाँदनी कभी चमन
सब की बाँहों में सोया रहा
वादी में इक घर का सपना
और अपनों का साथ रहे
यह उम्मीद थी ऑंखों में
हाथों में उसका हाथ हो
एक झलक दिखाई किस्मत ने
ठोकरों से जमकर धोया रहा
धूप हक़ीक़त से हुआ रूबरु
खामोश कोने में रोया रहा
'अंजुम '

*****

जिल्लत की की इस क़दर आदत हो गई

जिल्लत की इस क़दर आदत हो गई,
ज़ख़्म भी मिले तो जैसे राहत हो गई।
हर ताना अब दुआ सा सुनाई देता है,
हर ठोकर जैसे मेरी इनायत हो गई।
झुकते-झुकते कमर ही नहीं, रूह भी झुकी,
ख़ामोशी मेरी सबसे बड़ी हिकायत हो गई।
अपनों की बेरुख़ी ने यह सिखा दिया,
तन्हाई ही अब मेरी हिफ़ाज़त हो गई।
रोना भी चाहा तो आँसू न निकले,
शायद सब्र ही मेरी इबादत हो गई।
अब जिल्लत भी मुझे तोड़ नहीं पाती,
दर्द सहते-सहते आदत ही ताक़त हो गई।
'अंजुम '

*****

रूह का रूह से ही ताल्लुक इतना है
कब यह हुस्न राख में बदल जाए
मेरी जानिब न देख इस क़दर
ज़ालिम इक तबस्सुम पे दिल न मचल जाए
सब की बेरूखी को नज़रअंदाज़ किया
शायद हर ताल्लुक यूँ संभल जाए
दामन में छिप कर ये तो रह ही लेंगे
जाने कब हाथ से यह फिसल जाए
मुझ को जी भर के रो लेने दे 'अंजुम '
अश्क सब ऑंख से निकल जाए

*****

बंद कमरे की दीवारें कसती जा रही हैं
धीरे धीरे साँसें सीने में फंसती जा रही हैं
हालात पे रूह भी अब रहम नहीं करती
तन्हाई अश्कों पे तंज कसती जा रही हैं
जीने की वजह तलाश कर क्या करे कोई
भोर के चिराग़ की लौ घटती जा रही है
किसकी राह पर नजर बनाए रखे कोई
धुँधली आँख नम नज़र फटती जा रही है
ग़ैरत ही नहीं अब कहीं ज़िन्दग़ी में कोई
वक्त निकल रहा उम्र कटती जा रही है
ज़ख़्म आए मरहम न दे पाया मगर कोई
महरमे नज़र बीमार से हटती जा रही है
"अंजुम "

*****

चमन में बहारें भी बदस्तूर आएँगी
गुलों को छेड़ के तो हवाएँ सताएँगी
दिन रात धूपछाँव का सिलसिले से
ज़माने में रौनकें चार चाँद लगाएँगी
ज़मीन पर आसमान भी झुकेगा
नदियाँ भी अपने यौवन दिखाएँगी
फलक पर सितारों की महफ़िल भी
चाँदनी से कहीं छिपकर रह जाएँगी
गर्दिश से टूट कर इक 'अंजुम ' गिरेगा
सब की मन्नतें ख़ुद कबूल हो जाएँगी

*****

साँसें इस क़दर उलझी रही साँसों में
ख़ामोशी से उम्र ए सफ़र निकल गया
फरेब ए वफ़ा की तलाश में
हर बार नादान दिल अक्सर मचल गया
बहुत कोशिश हुई वक्त को कस लूँ मुट्ठी में
रेत था हाथ से फिसल गया
बहुत रोका मगर तुझे देखकर

'अंजुम ‘
*****

अश्कों का सैलाब ऐसे पिघल गया
ज़माना मेरी मंज़िल तय करता रहा
और मैं हर राह से ऐसे भटक गया
हर ज़ुबान की बदज़ुबानी सहन की
फिर भी सफ़र ए उम्र गुजर गया
सीने मैं सुलगाई वफ़ाओं की शमां
इसी कोशिश में दिल भी जल गया
खुशी की चाह में दर ओ' दीवार खुले
साए की तरह अंदर ग़म भी पल गया
विसाल ए यार की हसरत पाले रहे
जाने कब वो वक़्त आ के टल गया
'अंजुम '

*****

कुछ अजनबी से चेहरे
ख़्वाबों में आते हैं
कभी मैं गले लग जाता हूँ
कभी वो गले लगाते हैं
कुछ अजनबी से चेहरे
मुझ को बुलाते हैं
और पास आकर मेरे
दिल के मेहमान बन जाते हैं
कुछ अजनबी से चेहरे
कभी वो रूठ जाते हैं
कभी खुद मान जाते हैं
तन्हा जब उदास होता हूँ
मेरे दिल को सहलाते हैं
कुछ अजनबी से चेहरे
'अंजुम '

*****

बातों बातों में अपनी हर बात अधूरी रह जाती है
कितनी भी महफ़िल सजाएँ दिल में दूरी रह जाती है
शिक़वे शिकायत में ही सब वक़्त निकल जाता है
अगली मुलाक़ात के इंतज़ार की मजबूरी रह जाती है
ज़माने भर में अपने चर्चों पर बहस होती है अपनी
दिल की तो फिर कोई बात जरूरी रह जाती है
इज़हार ए जुर्म ए वफा कबूल कर भी लूँ 'अंजुम '
जज़्बात में धड़कन की इक मन्जूरी रह जाती है

*****

साये भी साथ चलते थे, अब साये छूट जाते हैं,
तन्हाई की राहों में कदम खुद रुठ जाते हैं।
दिल के वीरान कमरे में कोई दस्तक नहीं आती,
ख़्वाबों के टूटने पर भी चेहरे मुस्कुराते हैं।
रातों की चुप्पियों में कुछ आवाज़ें तैरती हैं,
हम सुनना भी चाहें तो कदम डगमगाते हैं।
यादों की राख ओढ़े हुए बैठा हूँ चुपचाप,
जिन लम्हों को छुआ था वो ही दर्द बन जाते हैं।
अब "अंजुम" क्या शिकायत हो वक़्त और किस्मत से,
ज़ख़्मों की निगहबानी में ही दिन कट जाते हैं।

*****

सूना आँगन, सूना मन
बिन आकस सूना दर्पण,
चारों ओर पसरी खामोशी
जैसे थम गया हो जीवन।
बिखरे सपनों की सरगोशी
रूठी-सी हर इक धड़कन,
कोई पुकारे मन के भीतर
पर मिलती बस अपनी तड़पन।
इस रिक्ति को भर दे कोई
छू ले मिट्टी का कंपन,
थाम ले हथेली यूँ पलभर
जैसे मिल जाए सावन।
अंततः थककर ये मन बोले—
छोड़ दे हर दुविधा-बंधन,
जो भी है अपना, दे दे उसको
पूरी निष्ठा, पूरा समर्पण। 'अंजुम '

*****

बेमुरव्वत, बेहया ज़िन्दगी,
छुटती भी नहीं, मिटती भी नहीं,
हर जख़्म को चूम लेती है ये,
कोई शिकायत करती भी नहीं।
दर–दर की ठोकरें खा के भी,
ये रूह कभी बिखरती नहीं,
ग़म की चादर ओढ़े रहती है,
मगर हकीकत कहती भी नहीं।
कभी ख़्वाबों में मुस्कुरा उठती,
कभी यादों में सुलगती रही,
हर बार मरी और जी उठी,
मगर मर के भी मरती नहीं।
दिन रात सुलगती ही रहती है
खुल कर जलती भी नहीं
सुकून की तलाश में व्याकुल
दर्द छिपाने से टलती भी नहीं
'अंजुम '

*****

ख़ामोशियों से गुफ़्तगू पे इसरार न कर
बेदिलों की महफ़िल में इज़हार न कर
जो सुकून मांगा तक़दीर ने दिया नहीं
इस के लिए ज़माने से तकरार न कर
दीदार ए जनून से इन्कार न कर
किसी बेवफ़ा के वादे पे एतबार न कर
परछाईयों की वजह रौशनी होती है
चिराग़ों के बुझने से इन्कार न कर
अपने ख्यालात की जग हंसाई भी देखी
औ' मुस्कान के पीछे छुपी रुलाई भी देखी
उम्र के इस मुकाम पे क्या हुआ 'अंजुम '
कभी अपने जज़्बात की रुस्वाई भी देखी

*****

सहरा में भटक गए इक वजूद के साथ,
तन्हाई बसी रही ख़ौफ़-ए-वफ़ात के साथ।
हस्ती ढल गई उम्मीद-ए-मुलाक़ात के साथ,
रह गईं बस साँसें चंद ख़यालात के साथ।
आईना पूछता रहा चेहरे का सब हाल,
हम ख़ुद से ही जूझते रहे सवालात के साथ।
ज़िंदगी गुज़र गई दर्द-ए-हालात में,
हम मुस्कराते रहे टूटे जज़्बात के साथ।
तेरे नाम से रोशन हैं मेरी सब तहरीरें,
लिखता रहे दर्द-ए-दिल 'अंजुम' के साथ।

*****

यह पश्चिम है —जहाँ हर चीज़ मशीनी है।
यहाँ मुस्कानें भी सॉफ़्टवेयर अपडेट से चलती हैं,
दुःख भी इमोजी में बाँटे जाते हैं,
और प्यार —वाइ-फाइ की रेंज पर टिका होता है।
यहाँ दिल नहीं,डिवाइस धड़कते हैं,
आवाज़ें गूँजती नहीं,रिकॉर्ड होती हैं।
यहाँ दोस्ती “कॉन्टैक्ट लिस्ट” है,
और मुलाक़ात —स्क्रीन के उस पार की एक झलक।
नींद अब गोली से आती है,
और सुकून —वर्चुअल रियलिटी के कोनों में ढूँढा जाता है।
यहाँ वक्त भी बेच दिया गया है,
घंटे डॉलर में,साँसें डेडलाइन में,
और ख़्वाब — सेल पर मिलते हैं।
यह पश्चिम है —चमकता, जगमगाता, पर भीतर से खाली।
जहाँ इंसान नहीं,बस परछाइयाँ रहती हैं —हर चीज़ मशीनी है। '
अंजुम'

*****

ज़िन्दगी बोझ बन गई है या
कभी खुद को और कभी सब को बोझ लगती है।
हर मुस्कान के पीछे एक सिसकी सी छुपी रहती है,
हर राहत में कोई उलझन सी जगती है।
आईनों में अब पहचान धुंधली लगती है,
सपनों की किरचें आँखों में चुभती हैं।
कदम बढ़ते हैं मगर मन थमता नहीं,
हर मोड़ पर थकी हुई साँस रुकती है।
कभी रिश्तों का भार, कभी उम्मीदों का,
हर सुकून भी अब ज़िम्मेदारी बनती है।
ज़िन्दगी… हाँ, अब एक सफ़र नहीं रही,
बस एक राह है — जो चुपचाप कटती है।
'अंजुम'

*****

गर्ज़-परस्ती में इंसान के किरदार बदलते देखे हैं,
ज़रा-सी बात पर लोगों के हक़दार बदलते देखे हैं।
जहाँ सच्चाई थी, वहाँ अब दिखावा है बस,
हमने नक़ाबों के पीछे संसार बदलते देखे हैं।
वफ़ाओं की किताबें अब धूल खा रही हैं,
हमने अरमानों के बाज़ार बदलते देखे हैं।
जो कल तक वफ़ा की मिसाल थे दुनिया में,
आज उन्हीं के इश्क़ के इज़हार बदलते देखे हैं।
रिश्तों की गरमी अब ठंडी सी लगती है,
हमने मौसम नहीं, अब घर-बार बदलते देखे हैं।
हर शख़्स मुखौटे में, हर चेहरा दोराहे पर,
अंजुम, हमने वक़्त के साथ यार बदलते देखे हैं।
'अंजुम'

*****

परत दर परत नींद जमती गई जाग जाग कर साँस थमती गई

ख़्वाब टूटा तो एहसास जागा नया रात ढलती गई, बात थमती गई

कुछ अधूरी हसरतें थीं दिल में वक़्त आया तो वो भी रमती गई

तेरी यादों की बारिश थी ऐसी भीग कर रूह तक नमती गई

हमने सोचा न था यूँ कभी 'अंजुम' ज़िंदगी भी ग़ज़ल सी बनती गई

*****

जब भी लगता है उनका इकरार-ए-मुहब्बत, वो लम्हा मृगतृष्णा बन जाता है
दिल में उठती है कोई हल्की सी लहर पर किनारा वीराना बन जाता है
नज़रों में जो चमक है उनकी यादों की वो भी धीरे-धीरे धुआँ बन जाता है
हर बार उम्मीदों का सूरज उगता है मगर अंधेरा अफ़साना बन जाता है
लबों पे नाम है, दिल में अरमान वही मगर हर ख़्वाब बेगाना बन जाता है
'अंजुम' अब तो यही सच समझ लीजिए वो रिश्ता भी अफसाना बन जाता है

*****

ज़माना मयकशी का इल्ज़ाम देता है,
इस राह पर क्यूँ आया — कभी नहीं पूछता।
मैं अपने ज़ख़्म हँसी में छुपा के चलता हूँ,
मगर कोई भी मेरे हालात नहीं समझता।
वो जो कभी मिरी तन्हाइयों में रक़्स किया,
अब गैरों की महफ़िल में मुझ पे हँसता।
हर बार दर्द को मैंने कलाम में ढाला,
मगर कोई भी मेरी सदा नहीं सुनता।
'अंजुम' ये दिल भी अजब सरकश मुसाफ़िर है,
गिरता है, उठता है — फिर भी नहीं रुकता।

*****

आँखों ने जो बात कहनी थी, होंठों ने छुपा ली,
थोड़ी सी नाराज़गी, थोड़ी सी बेक़रारी,
अजीब सा ये खेल था, दिल मचलकर भी ख़ामोश रहा,
हर एक पल में, बस एक तेरा ही सुरूर बहता रहा,
गुस्ताखियों का सिलसिला बदस्तूर चलता रहा।
तेरी मुस्कान पर हर बार दिल हार बैठे,
फिर से कोई नई शरारत का इरादा कर बैठे,
कभी मानना, कभी रूठना, ये ही तो अपनी कहानी है,
रिश्ते की इस डोर में, एक अटूट सा नूर बहता रहा,
गुस्ताखियों का सिलसिला बदस्तूर चलता रहा। 'अंजुम '

*****

हिज्र का ख़ौफ है या तन्हाई का डर
अजब सा आलम ए बदहवासी है
करीबियों में दूरियाँ भी जाहिर हैं
फिर भी धड़कनों में इक उदासी है
नज़रों में बस धुंधले से मंज़र हैं,
ख़्वाबों में अब न वो चमक बाकी है।
लबों पे नाम तेरा आता तो है,
पर दिल में पहले-सी वो बात बाकी है।
वक़्त ने रुख़ बदला तो हाल भी बदला,
अब हर खुशी भी कुछ उदासी है।
मिलन की चाह में बिखर गए जज़्बात,
हर साँस में तेरी तलाश बाकी है।
रूबरू मुलाक़ात तो दिल की हसरत है
धड़कन बन के रह गए इक एहसान से
मगर "अंजुम" को अब भी उम्मीद है,
कहीं न कहीं तू ज़रूर बाकी है।

*****

खूब सज-धज के घर से चल दिए
फुर्सत के चंद पल जो पा सकूँ कहीं
दुनिया के बाज़ार में हर तरफ पाई
बस भावशून्य भागम-भाग दौड़धूप
बदहवास चेहरों पर कहीं सुकूँ नहीं
अफरा तफरी के माहौल नज़र आए
कहीं जीने की चाहत नहीं, जनूँ नहीं
दौलत की चकाचौंध में सब चल रहे
दिल की खुशियाँ कर के खूँ कहीं
भीड़तंत्र ने धकेल कर गिरा दिया
रौंदा गया न जाने 'अंजुम ' कहीं

*****

खंडहरों के पास आकर तो देखो
खौफ का पर्दा हटाकर तो देखो
वहां पसरे सन्नाटे भी जवाब देंगे
उनमें आवाज़ लगा कर तो देखो
हां,थी किसी रोज, अब नहीं लगती
तन्हाई अब तो बोझ नहीं लगती
दर्द छिपाए ख़ुद पर एहसान किया
'अंजुम ' हर बात सोज़ नहीं लगती

*****

न रूठने का हक है, न टूटने की इजाज़त —
तेरे इश्क़ ने दी है मुझे बस हिरासत।
न छूटने का हक है, न तोड़ सकूँ ज़ंजीरें,
तेरे नाम से जुड़ी है मेरी हर हिरासत।
तेरी नज़रों में उलझा है मेरा हर ख़्वाब,
तेरे होंठों पे ठहरी है बस मेरी हिरासत।
तेरी खामोश निगाहों में जो राज़ छुपे,
उन्हीं राज़ों में कैद है इक मेरी हिरासत।
न साँसें मेरी हैं, न धड़कनें मेरी अपनी,
तेरी चाहत ही बन गई अब मेरी हिरासत।
'अंजुम' की तन्हाई भी तेरे दम से है
आबाद, तेरी मोहब्बत ही है उम्रभर की हिरासत।

*****

मौन अनंत का द्वार है

मौन अनंत का द्वार है,
जहाँ शब्द भी मान हार जाते हैं,
जहाँ ध्वनियाँ स्वयं में विलीन होकर,
शून्य में सत्य का रूप धार जाते हैं।
मौन में छिपा है जीवन का संगीत,
जिसे कान नहीं, आत्मा सुन पाती है।
यह गूंज नहीं, यह स्वर नहीं,
बस अस्तित्व की निस्तब्ध गाथा गाती है।
मौन में ही मन का दर्पण साफ़ होता है,
विचारों का कोलाहल क्षीण होता है।
भीतर का शाश्वत प्रकाश जाग उठता है,
और आत्मा अनंत में विलीन होता है।
इसलिए मौन से डरो नहीं, उसे अपनाओ,
यह तप नहीं, यह थकान नहीं,
यह तो अमर शांति का सागर है,
मौन सच में अनंत का द्वार है।

'अंजुम '

*****

मृत्यु अंत नहीं, अनंत का प्रमाण है,
जीवन के रहस्य का यही विधान है।
क्षणभंगुर देह मिल जाए मिट्टी में,
आत्मा का प्रवाह असीम आनंद समान है।
यह सिर्फ़ परदा है, मंज़िल नहीं कोई,
राह बदलती है, रुकती नहीं कोई।
जन्म से मृत्यु तक यात्रा का विराम है,
मृत्यु से आगे अमरत्व का आयाम है।
मृत्यु का मौन भी संदेश सुनाता है,
जीवन से परे सत्य दिखलाता है।
यह अंधकार नहीं, दीप का ज्ञान है,
मृत्यु अंत नहीं, अनंत का प्रमाण है।
बिखरकर भी अस्तित्व कभी मिटता नहीं,
सागर में मिलकर बूँद रुकता नहीं।
हर प्राण का यही अनश्वर गान है,
मृत्यु अंत नहीं, अनंत का प्रमाण है।
'अंजुम '

*****

सागर की ख़ामोशी को बेजा न समझ,
ये तूफ़ाँ का आलम है, सौदा न समझ।
जो लहरों में छुपता है सीने के साथ,
उसे सिर्फ़ पानी का दरिया न समझ।
कभी मोती बिखरते हैं दामन में इसके,
कभी ज़हर का जाम है, प्याला न समझ।
ये खामोश चेहरे पे रखता है नक़ाब,
मगर दिल का आलम तू चेहरा न समझ।
सुना है चुप है तो बेजान होगा 'अंजुम '
ये ख़ामोशी तूफ़ान से कमतर न समझ।

*****

किसी मोड़ पर मिल ही लेंगे तुझ से
झूठा ही सही मगर उसका इकरार तो है
अश्क बनकर आँख से निकल न जाए
उस सपने पर मुझ को यह एतबार तो है
दर्द छिपाए पर उसको निकाला नहीं
उसका मेरे दिल पर यह इख्तियार तो है
हक़ीक़त ये कि खिजाँ चमन में हावी है
फिलहाल आने को बेताब बहार तो है
वफाओं का यह सिला पाया है अगर
ज़ुबान से न माने मगर शर्मसार तो है
अदाओं से, इशारों से लुटाए जलवे
बेशक वो इक बेकसूर कलाकार तो है
तस्सवुर में ही सही कोई वफादार तो है
तदबीर न सही ख्वाबों की इंतज़ार तो है
सहराओं में भटक रहा कहीं बयार तो है
मगरूर हूँ कोई मिलने को बेकरार तो है
फलक पर इक अजब सी घुटन है छाई
वफा के बादल बरसने के आसार तो है
बेसबब होती नहीं रुसवाईयां 'अंजुम '
हर अफसाने का कोई आधार तो है

*****

अंतर्द्वंद है चल रहा अस्तित्व का वर्चस्व का
सत्य का असत्य से कुछ मृतक कुछ मृतप्राय
सिसकियाँ लेती आशाओं का मरी हुई चाहतों का
कंधे पे लाश ढोती अपनी छटपटाती साथी चाहतों का
या फिर टूटी उम्मीदों से कुछ राहतों का
सहनशील रहकर स्वयं पर किये अत्याचारों का
और भूले विचारों का अंतर्द्वंद है चल रहा
प्रत्युत्तर न देकर तलवार से तीखे शब्दबाण के वारों का 'अंजुम '

*****

चुस्की से पियो हिचकी नहीं आती

चुस्की से पियो, हिचकी नहीं आती,
महफ़िल में फिर वो रुसवाई नहीं छाती।
साक़ी की निगाहें भी मुस्कुराने लगतीं,
जब जाम की रवानी बेअदब नहीं जाती।
हौले-हौले सुरूर भी दिल को सहलाता,
तेज़ी से पियो तो नशा सर पे चढ़ जाती।
ज़िंदगी भी जाम की मानिंद है "अंजुम",
आहिस्ता पियो तो मिठास रह जाती।

*****

रंजिशें हैं अगर दिल में तो खुलकर गिला करो,
छुप-छुप के आहें भरने से तो बेहतर है मिला करो।
बातें अधूरी छोड़ के मत बढ़ो यूँ फासलों में,
जो कहना है कह दो, नफ़रत न पलो साँसों में।
दिल का बोझ उतार दो लफ़्ज़ों के सहारे से,
रिश्ते सँवरते हैं सच्चे इकरार के इशारे से।
ग़म को दबाना ज़हर है, चुभता है रगों में,
सुकून वही पाए जो सच बोले नग़्मों में।
खुदा ने दिल दिए हैं महज़ धड़कने के लिए,
नफ़रत नहीं मोहब्बत के रंग भरने के लिए।
तो आओ रंजिशों को मिटाएँ, ग़मों को जला करो,
अगर दिल में है शिकवा तो खुलकर गिला करो।
'अंजुम '

*****

दौर ए खुदगर्जी है वो बेकसूर है यूँही उम्मीद के दिए जलाए बैठा हूँ
होंगे इक बार तो मेहमान वो मेरे दिल की महफ़िल सजाए बैठा हूँ
कतरा कतरा देखा पिघलता आसमान फलक पे तारों को लुटाए बैठा हूँ
वो आएँ और मेरा मकान न दिखे गली में भी शमा जलाए बैठा हूँ
कहीं भटक न जाए मेहमान मेरा राह पर नज़रें जमाए बैठा हूँ
धड़कनें दर्द की दास्तान न कह दे तड़प अपनी छिपाए बैठा हूँ
'अंजुम ' से ठोकर न खाए कोई खुद को राहों से हटाए बैठा हूँ

*****

सच किसी ने डराया नहीं होता झूठ का कोई पाया नहीं होता
रोशनी दिल में जगमगाती रहती अँधेरों का साया नहीं होता
अगर हर लफ़्ज़ आईना होता फरेब का सरमाया नहीं होता
राहें सबको सुकून देतीं सफ़र ने डराया नहीं होता
हर रिश्ता पाक रह जाता गर दिल में माया नहीं होता
‘ अंजुम’, दुनिया और होती गर सच को भुलाया नहीं होता

*****

अँधेरे में साए को दूर होते देखा है,
रौशनी में उसे मजबूर होते देखा है।
जब ख़्वाबों के शहर में चिराग़ जलते हैं,
सच का झूठ के आगे सिर झुकते देखा है।
हर सुकून की राह में काँटे बिछे पाए,
हर हँसी के पीछे आँसू बहते देखा है।
जो अपने थे, वही अनजान बन बैठे,
रिश्तों को समय का दर्द सहते देखा है।
मगर उम्मीद की लौ को बुझने न दिया,
तूफ़ानों में भी दिल को धड़कते देखा है।
'अंजुम'

*****

मेरी इस चाहत को दरकिनार न कर
मुहब्बत के दो अल्फाज़ ही दरकार हैं
हसरत लिए दिल देखता है तेरी जानिब
कह दो जो दिल में ज़रा सा प्यार है
कभी तो गले से लगा लेगा हमें
उस हसीन लम्हे का इंतज़ार है
इक अरसे से तेरी खुशबू नहीं मिली
'अंजुम' इक यही इलाजे बीमार है

*****

ढलती साँझ हूँ, गहराते अँधेरे से डरती हूँ
दिनभर के उजालों की थकी सी मुसाफ़िर हूँ,
कुछ अधूरे ख्वाबों की परछाई में बिखरती हूँ।
रंग थे कभी मेरे भी, सुरमई धूप की तरह,
अब बस यादों की राख़ हूँ, हल्की सी ठिठरती हूँ।
कभी प्रेम में भीगी, कभी आँखों से बरसी,
अब खामोशी की भाषा में हर साँस लिखती हूँ। 'अंजुम '

*****

सिकुड़ जाती है दुनिया
इक माँ के चले जाने से
हर नाज उठाती थी वो
अब दिल भरा खाने से
हँसी किसे कहते हैं
तरस गया मुस्काने से
लब सिल गए हैं जैसे
ज़ुबाँ बंद है जमाने से
गाली भी दुआ होती थी
रुकते न थे हम सताने से
रूठ जाती थी झूठ मूठ
चूमती गले लग जाने से
वजह ढूँढता हूँ जीने की
'अंजुम ' खोया टूट जाने से

*****

काफ़ी तन्हा हूँ
तन्हा ही मैं काफ़ी हूँ
जो तन्हा हूँ तो तन्हा हूँ
जो तन्हा हूँ तो काफी हूँ
नहीं है साथ साया भी
अंधेरों में भी काफी हूँ
खड़ा हूँ भीड़ में लेकिन
खुद में भी मैं काफी हूँ
हवाओं में है शोरो गुल
अपनी सदा में काफी हूँ
फलक पे है हुजूम तारों का
'अंजुम ' चमक में काफी हूँ

*****

फक्त दो अल्फाज ही निकले थे मगर
ख्याल आते रहे मैं लिखता चला गया
ज़िन्दगी फिर दूर रहकर मुस्कुराई ऐसे
वफात की आगोश में मिटता चला गया
कोई शिकवा शिकायत नहीं ज़िन्दगी से
जो भी राह में मिला मिलता चला गया
कुछ उसूल पर कायम रखी थी चाहतें
जीने के लिए सब से फिरता चला गया
इतना भी आसान न था जीना 'अंजुम'
गिरते पड़ते उसी राह पे चलता चला गया

*****

सवालों के जंगल में भटकता रहा
जवाबों की पगडंडी मिली ही नहीं
मैंने खुद को बाँट दिया हर किसी में
पर मुझे मेरी हस्ती मिली ही नहीं।
अब सोचता हूँ जोड़ लूँ वो टुकड़े फिर ,
शायद कोई तस्वीर बन जाए
मेरे वजूद का खोया हुआ रंग
किसी नए सवेरे में ढल जाए।
'अंजुम'

*****

"क्यों आया हूँ?"

कभी सोचा — क्यों आया हूँ?
क्या बस जीने को ही पाया हूँ?
हर दिन भागते पैरों से
क्यों खुद को ही मैं छिपाया हूँ?
बचपन में सपने थे प्यारे,
पर बड़े हुए तो सब लगने लगे हारे।
भीड़ में दौड़ते-दौड़ते
क्या मैं खुद को ही तो नहीं हारे?
हर मुस्कान के पीछे प्रश्न छिपा है,
हर जीत में कुछ अधूरापन छिपा है।
क्या यही है जीवन की राह?
या अब भी बाकी है कोई करामात?
आत्मा पूछती है — क्या तुझमें आग है?
या तू बस एक आदत का भाग है?
तू क्यों जिंदा है, ये जान लेना,
जीवन जीने से कहीं ज़्यादा है जीवन को पहचान लेना।
अब ठहरकर खुद से मिलना चाहता हूँ,
सिर्फ़ सांस नहीं, एक अर्थ जीना चाहता हूँ।
शायद यही उद्देश्य है इस जीवन का —
अपने भीतर के मौन में खुद को सुनना।
'अंजुम '

*****

ख़्वाब और ख़याल दोनों ऐसे मिल गए हैं
रात की तन्हाई में जैसे सितारे खिल गए हैं।
कभी लगता है ये बस दिल की सरगोशियाँ हैं
कभी लगता है ये हक़ीक़त की आहटें हैं।
आँखें बंद करूँ तो चेहरा सा नज़र आता है
आँखें खोलूँ तो वही रूह में उतर जाता है।
पलकों के साये में उम्मीदें जागती हैं
ख़ामोश साँसों में हसरतें महकती हैं।
ये तय कर पाना मुश्किल है हर बार
कि ये ख़्वाब है या ख़याल का इज़हार।
दिल की गहराइयों में दोनों एक हो गए
ख़्वाब और ख़याल—एक रंग हो गए।

*****

ज़िन्दगी तू रूठ जाती है अक्सर
मैं मनाता ही रहता हूँ तुझे टूटकर
कभी माँ को खोया, वही ज़िन्दगी
फिर बाप खोया घनी छाँव मेरा
न रख पाया उसे मैं पकड़कर
ज़िन्दगी तू रूठ जाती है अक्सर
दोनों के दरम्यान ऐसा भी होगा
मैं रूठ जाऊँ तुम से बिछड़ कर
मनाना चाहोगी मुझे ढूँढ कर
न मिलूँगा 'अंजुम ' तुझे इधर-उधर
ज़िन्दगी तू रूठ जाती है अक्सर मैं मनाता ही रहता हूँ तुझे टूटकर।

*****

थक चुके हैं रास्ते, मंज़िल भी कुछ थकी-सी है,
ज़िन्दगी की दौड़ अब पहले-सी कहाँ रही-सी है
आँख में छुपा हुआ ज़ख़्म कोई पढ़ न सका
मुस्कुराहटों की ओट में इक चीख़ दबी-सी है
हमने चाह की उम्र भर सींचा था ख़ुलूस से
फिर भी दिल की बाग़ में वीरानी खड़ी-सी है
लौटकर नहीं आया कोई भी पुकार से
रूह तक की दहलीज़ पर तन्हाई पड़ी-सी है
धुंध के किनारों पर यादें भी काँपने लगीं
रात की जहालत में हर परछाई सघन-सी है
लोग अपनी मर्ज़ी से रिश्ता निभा गए
मगर हम पे हर रवायत जैसे ज़ंजीर चढ़ी-सी है
'अंजुम '

*****

कितने सपने दफ़न किए कितने अरमान जलाए हैं
आँखों में खाब चुभते रहे पर तेरे तो खाब सजाए हैं
अपने काँटों की चुभन भूला तेरी राह में फूल बिछाए हैं
कितना है तू बेवफा 'अंजुम ' बाग़बां के एहसान भुलाए हैं

*****

अश्कों से मेरी तकदीर लिखी
तेरे चेहरे पे मुस्कान मुबारक
हम बेगैरत होकर जी लेंगे
तुम्हें तुम्हारी शान मुबारक
डंका बजे तुम्हारा जगत में
मुझे मेरा अपमान मुबारक
इल्ज़ाम ए अहसान फरामोश दिया
तुझे तेरा एहसान मुबारक
सुपुर्द ए खाक हुआ तो क्या
"अंजुम" तुम्हें आसमान मुबारक

****

बाज़ औकात मुसाफ़िर राह भटक जाते हैं,
हर राही मंज़िल पा जाए यह जरूरी तो नहीं
कुछ नाखुदा बीच मंझधार में भी छोड़ देते हैं,
कश्ती को साहिल मिल जाए यह जरूरी तो नहीं
कुछ लोग ज़माने में बेवफा भी होते हैं,
यारो हर कोई साथ निभाए यह जरूरी तो नहीं
अमूमन हर बशर गर्ज़ परस्त ही होता है,
तुम्हें अलगर्ज़ मिल जाए यह जरूरी तो नहीं
माना तू अपने किए पर शर्मिन्दा है
बहुत वह भी शर्मसार हो जाए यह जरूरी तो नहीं
ताल्लुक के लिए तार्रुफ़ नहीं करते हैं
सब दिल से दिल भी मिल जाए यह जरूरी तो नहीं
कुछ लाशें जहाँ से नंगी भी उठती है
सुमन सब को कफ़न मिल जाए यह जरूरी तो नहीं। 'अंजुम '

*****

*काँच के टुकड़े *

आंखों में कांच से चुभते हैं कुछ सपने ऐसे ही होते हैं
नकली मुस्कान लिए चेहरे पे हम भीतर भीतर रोते हैं
होंठों पर हंसी जो खुल के आए नामालूम वो पल कैसे होते हैं
यादें क्यों ले जाती हैं माजी में हर पल पिछले कल को ढोते हैं
चल दिया लहरों में छोड़ सफ़ीना कुछ नाखुदा बेवफा भी होते हैं
सब सुमन की न माला बनती कुछ पैरों तले भी तो होते हैं
सलामत रहो ऐ दुनिया वालो अब हम कब्र में चैन से सोते हैं 'अंजुम '

*****

बीते कल की यादें बहुत सताती हैं
साथ अपने आज भी ले जाती हैं
हम आज में जीना भी चाहें तो
माज़ी के मंज़र में तड़पाती हैं
उन से धोखा भी खाया था
फिर भी ख्यालों में उन्हें ही ले आती हैं
सोचा था ताल्लुक रहेगा जिन्दगी भर
वो टूटे हुए सपने हैं यह समझाती हैं
कांच की मानिंद चुभते हैं
सपने आंखें पलकों में अश्कों को छुपाती हैं

*****

कच्ची गलियों में दौड़ता साया घुटनों की चोट, माँ का हुनर,
फूँक में सिमट जाती थी पीड़ा आँचल था पूरा का पूरा असर।
कभी स्कूल की घंटी बजती कापी में कैद होते ख़्वाब,
रास्ते छोटे, शामें लम्बी जेब में सिक्के, आँखों में आब।
यादों का ये जंगल भी क्या है छाँह भी देता, करता है डर,
जिस मोड़ पे ठहर कर देखूँ खुद से मिलता हूँ हर पहर। 'अंजुम '

*****

घुटन और ख़ामोशी

ख़ामोशी की एक परत ओढ़े बैठा हूँ,
बोल सकता हूँ, पर क्या कहूँ?
हर शब्द जैसे अपनी ही दीवारों से टकराता है,
और लौट आता है — बेजान, थका हुआ।
भीतर एक कोलाहल है, जिसे कोई सुन नहीं सकता।
चेहरे पर शांति है, पर मन में तूफ़ान है जिसका कोई किनारा नहीं।
घुटन —
वो चीख है जो बाहर नहीं आती,
वो आंसू हैं जो आँखों तक नहीं पहुँचते,
वो बोझ है जो दिल से उठाया नहीं जाता,
और ख़ामोशी —
उसका सबसे प्रिय रूप।
लोग पूछते हैं — "सब ठीक है?"
मैं मुस्कुरा देता हूँ,
क्योंकि समझाना थक चुका हूँ,
और समझने वाला कोई रहा नहीं।
शब्दों से परे एक दुनिया है,
जहाँ हर साँस एक संघर्ष है,
जहाँ हर मुस्कान में एक दरार है,
और हर चुप्पी में —
एक कहानी दबी है।
कभी सोचा है,

कि सबसे ज़्यादा बातें वो करते हैं
जो भीतर से सबसे ज़्यादा खाली हैं,
और जो बिल्कुल चुप हैं,
शायद वही — सबसे ज़्यादा टूटा करते हैं।

*****

स्वयं की खोज — कौन हूँ मैं?

कौन हूँ मैं, यह प्रश्न पुराना,
पर उत्तर इसका अब भी अंजाना।
दर्पण में देखूँ, चेहरा है मेरा,
पर उस चेहरे के पीछे कौन बसेरा?
नाम मिला, पहचान बनी,
भीड़ में चलती, जैसे कोई धुन सुनी।
पर भीतर गूंजे एक मौन सवाल,
क्या यही हूँ मैं — ये ही मेरा हाल?
मैं विचार हूँ, या भावना की धार?
क्षणिक लहर, या सागर अपार?
शब्दों से गढ़ा, या मौन में खोया?
किसी स्वप्न का अंश, या सत्य का संजोया?
मैं उन राहों का राही भी हूँ,
जो कभी चले ही नहीं,
मैं उन साँसों की चाहत भी हूँ,
जो किसी पल में सजीव बनी।
कभी प्रश्न हूँ, कभी उत्तर अधूरा,
कभी नींद में सपना, कभी आँखों में नूरा।
मैं खोज हूँ, मैं प्यास भी हूँ,
मैं खुद में ही एक आस भी हूँ।
तो कौन हूँ मैं? शायद चल रहा एक गीत,
जो खुद ही सुनता, खुद ही रचता,
हर पल नया, हर क्षण अजीत।

'अंजुम'

*****

"मैं खुद से मिला"

चल पड़ा था भीड़ के साथ,
हर मोड़ पे बदली मेरी बात।
चेहरे बदलते, राहें भी नईं,
पर खो गया मैं, अपनी ही कहीं।
एक दिन थम के देखा पलट,
आवाज़ आई — "क्या पाया, क्या गवांया चलत?"
आईना नहीं, मन था सामने,
सवाल वही थे जो दफ़न थे अंधेरे तहख़ाने।
मैंने पूछा — "कौन हूँ मैं?"
"इन नामों से परे, इस तन से तन्हा?"
एक ख़ामोशी गूंज उठी भीतर,
बोल पड़ा दिल — "तू ही है सबसे बड़ी किताब बेअसर।"
भूल गया था मैं अपनी धड़कन,
कभी जो ख्वाब थे, हुए आज अनजाने मन।
फिर उठा कलम, लिख डाली दास्तां,
खुद से मिलने की वो पहली दास्तान।
अब हर सुबह, कुछ देर खुद में डूब जाता हूँ,
भीतर के सागर में चुपचाप उतर जाता हूँ।
जो जवाब दुनिया ने न दिए कभी,
वो अपने ही सन्नाटों में पा जाता हूँ।

*****

खिलौने सजा रखे हैं
गुफ़्तगू की मेज़ पर
बात ज़रा दोहराओ तो
मुस्कानें चुपचाप हवा में घुल जाती हैं
होंठों से पहले आँखें सुन लेती हैं सब
और हर अधूरी बात पर खिलौनों की तरह
हँसी धीरे से टूटकर बिखर जाती है
खिलौने ख़ामोश हैं और मुझे टोकते नहीं
मेरी बातों के बीच कहीं भी नहीं आते
मैं जो कह न सका वो भी सुन लेते हैं
और बिना कुछ पूछे मेरी चुप्पी को
हथेलियों में रखकर धीरे से संभाल लेते हैं
खिलौने खुलकर बात करते हैं
मुझे अपना राज़दार समझते हैं
मेरी हथेली पर रख देते हैं अपने अनकहे डर
मैं कुछ कहूँ या न कहूँ उन्हें फ़र्क़ नहीं पड़ता
मेरी ख़ामोशी में भी वे भरोसे की
हल्की सी धड़कन सुन लेते हैं

*****

नमोशी और खामोशी

नमोशी की कोई आवाज़ नहीं होती,
पर उसकी उपस्थिति मन को झुका देती है।
जैसे कोई फूल, जिसकी ख़ुशबू बिना बोले
हवा में इज़्ज़त घोल देती है।
खामोशी कुछ कहती नहीं, फिर भी बहुत कुछ सुना जाती है।
वो शब्दों से नहीं, नज़रों, सांसों और
अहसासों से बातें कर जाती है।
नमोशी को लोग अक्सर कमज़ोरी समझते हैं,
पर वो वही ताक़त है जो तूफ़ानों के सामने भी
सर झुकाकर खड़ी रहती है।
खामोशी को लोग डर समझ बैठते हैं,
पर कभी किसी की चुप्पी में झाँको —
वहाँ एक पूरी दुनिया रो रही होती है, या कभी-कभी…
खुद को समेट कर मजबूत बन रही होती है।
नमोशी वह दीपक है जो खुद जलकर
औरों को रास्ता दिखाता है,
बिना यह कहे कि उसने क्या खोया।
खामोशी वह दरिया है जो गहराई में बहता है,
बिना किसी शोर के अपनी दिशा तय करता है।
जब नमोशी और खामोशी एक साथ किसी इंसान में बस जाएँ —
तो वह व्यक्ति ना ऊँचा बोलता है, ना ऊँचा दिखता है,
पर उसकी ऊँचाई को समझने में ज़िंदगी लग जाती है।

*****

"माँ की ख़ामोशी"

सुनसान रात की चुप्पी में,
जब सारी दुनिया सो जाती है,
एक साया अब भी जागता है —
माँ की ख़ामोशी कुछ कह जाती है।
न उसकी आँखों में शिकायत होती,
न होठों पर कभी थकान दिखी,
हर आँसू को पी लिया उसने
जैसे वो भी कोई सज़ा थी सही।
चूल्हे की राख में जो जलते ख्वाब थे,
कभी बच्चों की भूख में ढल गए,
कभी पिता की तनख्वाह बनकर,
किचन के कोने में पल गए।
उसके सपनों की उम्र नहीं होती,
वो हर उम्र में सिर्फ़ 'माँ' रहती है,
अपनी पहचान को ओढ़कर,
हर चेहरे में सिर्फ़ परछाई रहती है।
जो कभी स्कूल की घंटी बनती थी,
तो कभी बुख़ार की दवा बन जाती,
रातों को नींद से सौदा कर
ताकि बच्चे मीठी नींद में मुस्कराते।
वो कविता नहीं, एहसास है,
शब्दों से परे एक संवाद है,
माँ को समझना हो अगर
तो मौन में उतरना अनिवार्य है।

*****

"जो कभी माँ थी, अब सब कुछ है"

जिस दिन मैं टूटा था भीतर से,
एक आवाज़ आई थी — "मैं हूँ न..."
वो न भगवान थी, न कोई फ़रिश्ता,
बस मेरी माँ थी, और उसी में सब कुछ था।
उसकी गोद में सर रखकर,
जैसे सारा ब्रह्मांड स्थिर हो जाता,
उसके आँचल की छाँव में
हर दुःख जैसे सिर झुका जाता।
मैंने देखा है उसे —
खुद को बाँटते हुए रोटियों में,
नींद उधार रखती थी वो,
ताकि मैं ख़्वाब पूरे कर सकूँ रातों में।
उसने कभी खुद के लिए कुछ नहीं माँगा,
न सोने के ज़ेवर, न भारी साड़ियों के रंग,
बस बच्चों की हँसी का उजाला ही था
उसका सबसे महँगा संग।
उसके पैरों में पड़ी दरारें
शायद धरती की थकान से गहरी हैं,
और फिर भी वह चलती जाती है,
जैसे उसकी रगों में सिर्फ़ करुणा बह रही है।
जब सबने मुझे छोड़ दिया था,
वो अकेली थी जो मेरी चुप्पी से बात करती थी,
उसकी आँखें आँसुओं की भाषा जानती थीं,
और दिल... बिना शब्दों के मेरी हालत समझती थी।

कभी उसका नाम नहीं लिखा मैंने कविताओं में,
क्योंकि वो हर शब्द में रहती है,
वो कविता की आत्मा है —
जो हर बार खुद मिटाकर, मुझे रचती है।

*****

"पिता का मौन"

छाँव बनकर चलते रहे, धूप को सीने में छुपा लिया,
हँसी बाँटी सबको, और आँसू ख़ामोशी में पी लिया।
माथे की सिलवटें गवाही देती हैं हर रात की थकान की,
पर चेहरे पर मुस्कान वही — जैसे हो कोई पर्व महान की।
कभी कुर्ते की जेब में फटी रसीदों का हिसाब रहा,
कभी बच्चों के खिलौनों में ही उनका ख्वाब रहा।
कंधों पे बोझ नहीं, फ़र्ज़ उठाए थे उन्होंने,
हर सांस में सिर्फ़ परिवार के नाम लिखे सपने बोए थे उन्होंने।
जब भी थके, कभी दिखाया नहीं, बस चलते रहे,
और हम सोचते रहे — पिता तो बस सख़्त होते हैं।
कभी उनकी आँखों में झाँक के देखो,
वहाँ भी नमी होती है —
बस वो आँसुओं को मर्यादा का नाम दे देते हैं।

*****

"पापाजी, आप अब भी पास हैं"

चले गए आप — मगर
हर सुबह की रौशनी में अब भी
आपके पैरों की आहट सुनता हूँ,
जैसे नींद में कोई कह जाता है,
"बेटा, उठ जा… देर हो जाएगी…"।
आप तो बस नाम भर के चले गए,
आपकी चप्पल आज भी दरवाज़े के पास रखी है,
जैसे आप अभी बाहर से आएँगे,
और कहेंगे — "ठंड है ज़रा चाय बना दे"।
आपकी खाँसी की आवाज़
अब भी दीवारों से टकरा कर लौटती है,
और मैं चौंक कर देखता हूँ —
पर वहाँ बस ख़ालीपन होता है।
पापाजी, आपने कभी गले नहीं लगाया,
पर आपकी हथेली की कठोरता
आज भी पीठ सहलाती है —
जब ज़िंदगी बहुत भारी लगती है।
आपकी चुप्पियाँ अब बोलती हैं मुझसे,
हर अधूरी बात में, हर अधूरे काम में —
आपका सपना बसा है,
जिसे अब मैं पूरा करना चाहता हूँ…

क्योंकि अब मैं वही बेटा नहीं,
अब मैं आपका प्रतिबिंब हूँ।
आप चले गए, पर एक पूरा ब्रह्मांड
मुझमें छोड़ गए।

'अंजुम '

*****

"थाली पर डाँट"

"खा क्यों नहीं रहा? ठंडा हो गया सब!"
हर बार ये सुनकर मैं बस मुस्कुरा देता था,
क्या बताता पापाजी... भूख तो आपकी आवाज़ से ही लगती थी।
थाली सामने रख खुद भूखे रह जाते थे,
और मेरी एक-एक रोटी गिनते रहते थे —
जैसे उसमें आपकी साँसें बसी हों।
"हर वक्त मोबाइल, कुछ खा भी लिया कर!"
वो डाँट नहीं थी, वो तो एक दुआ थी —
जो हर निवाले के साथ मेरे गले से उतरती थी।
अब थाली पर सन्नाटा है, और वक़्त की कुर्सी खाली।
कोई नहीं कहता — "दाल कम है, ले आ..."
अब जब भी अकेले बैठता हूँ खाने... आपकी आवाज़ कानों में गूंजती है।
पापाजी,
वो डाँट अब स्वाद बन गई है,
हर निवाला अब आपकी कमी में भीग जाता है।

*****

"चुप्पियों का शोर"

आँख नम हैं, अश्क पिए हुए।
लफ़्ज़ कम हैं, लब हैं सिले हुए।
हर सवाल दिल में दबा हुआ,
हर जवाब कहीं खोया हुआ।
हँसी के पीछे दर्द छुपा है, चेहरे पे नूर,
पर दिल रोया हुआ।
सुनने वाले बहुत हैं यहाँ,
पर समझने वाला कोई नहीं।
भीड़ में तन्हा चलते रहे,
अपने साए तक को रोए नहीं।
ख़्वाब जो आंखों में थे कभी,
अब धुंधले से लगते हैं।
जिनसे बातें थीं हर रोज़,
आज वो भी पराये से लगते हैं।
कुछ तो है जो टूटा है अंदर,
कुछ है जो अब भी जुड़ा नहीं।
जी रहे हैं बस यूँ ही रोज़,
पर ज़िन्दगी से कोई रिश्ता गहराया नहीं।
अंत में:
अब खुद से मिलने की तमन्ना है,
इन चुप्पियों को आवाज़ देने की चाह है।
कभी जो टूटा था वक़्त के साथ,
उसे फिर से जोड़ने की राह है।

*****

तसव्वुर में कई बार खुद को मरते देखा है
मौत के फरिश्तों से गुफ़्तगू करते देखा है
हर सांस में ज़िन्दगी का इक बोझ महसूस हुआ,
लबों पे हँसी थी पर दिल को डरते देखा है।
कभी ख़्वाबों में खुद से ही हिसाब लिया मैंने,
कभी जागते हुए भी आँसू झरते देखा है।
वो वक्त, वो लोग, वो किस्से सब धुँधले पड़े,
आईने में अपने वजूद को सिहरते देखा है।
कभी उम्मीद की लौ जली, कभी बुझी ख़ामोशी में,
हर दफ़ा सच को झूठ से झगड़ते देखा है।
"अंजुम" ये ज़िन्दगी भी इक सफ़र-ए-रहगुज़र निकली,
हर मोड़ पे ख़ुद को फिर से बिखरते देखा है।

*****

कभी खुलकर सीने से लगा लो मुझ को
ग़म ए जहान की तन्हाई से छुपा लो मुझ को
फिर चुपचाप कहीं भीड़ में गुम न हो जाऊँ
रख के पलकों में दुनिया से चुरा लो मुझ को
नाकाम हसरतों के जनाजे उठते हैं दिल में
इस वहशत ए हालात से बचा लो मुझ को
एक भटकी हुई बहार हूँ किसी गुलशन की
हो सके अपने चमन में सजा लो मुझ को
अब तो अपना साया भी डराता है अक्सर
हो सके तो इन उजालों से हटा लो मुझ को
मैं तो ख़ुद का भी कभी हो न सका अपना
हो सके तो तुम ही अपना बना लो मुझ को
पल भर को दिल की बात सुन लो 'अंजुम'
रूठ कर चाहे जितना भी सता लो मुझ को

*****

छोटी छोटी खुशियाँ
छोटे छोटे सपने
मिट गए शिकवे
मिल गए अपने
धूप सी मुस्कानें
छाँव सी बातें
जीवन के मेले में
बस अपने नाते
थोड़ी सी हँसी में
सारी थकान घुली
पलकों पे ठहरी
शामें भी धुली
न शिकवा न गिला
न कोई दूरी रहे
छोटी सी दुनिया में
बस बड़ी ख़ुशबू रहे

अंजुम

*****

अभी तो आया है होश मुझे
अभी तो मेरी आँख खुली है
फ़रेब था जो दिल में बसा
वो परत दर परत धुली है

जो ज़हर पिया था यादों का
वो अब तलक असर में घुली है
कभी जो आँसुओं में थी
वही हँसी अब फूल खिली है

सफ़र में ठोकरें मिलीं बहुत
मगर रूह अब भी भली है
'अंजुम' ये इश्क़ का फ़साना
नई सुबह सी फिर ढली है

*****

दबे हुए अरमानों की बस याद रह गई,
घुटे हुए जज़्बातों की फ़रियाद रह गई।
हर ज़ख्म मुस्कराकर छुपाया है हमने यूँ,
कि दर्द में भी अब कोई फ़रियाद रह गई।
वो वक़्त, वो लम्हे, वो बातें कहाँ गईं,
हर ख़्वाब के पीछे बस बरबाद रह गई।
अब ख़ुद से भी मिलना हुआ मुश्किल
ज़िन्दगी क्या थी, बस इक याद रह गई।
लब पे तो चुप्पियाँ हैं, दिल में शोर है
वही बात कह न पाए, वही बात रह गई।
हमने भी चाहतों के दिए खूब जलाए थे,
पर रौशनी में भी कोई अंधी याद रह गई।
'अंजुम '

*****

आँखों ने जो बात कहनी थी, होंठों ने छुपा ली,
थोड़ी सी नाराज़गी, थोड़ी सी बेक़रारी,
अजीब सा ये खेल था, दिल मचलकर भी ख़ामोश रहा,
हर एक पल में, बस एक तेरा ही सुरूर बहता रहा,
गुस्ताखियों का सिलसिला बदस्तूर चलता रहा।
तेरी मुस्कान पर हर बार दिल हार बैठे,
फिर से कोई नई शरारत का इरादा कर बैठे,
कभी मानना, कभी रूठना, ये ही तो अपनी कहानी है,
रिश्ते की इस डोर में, एक अटूट सा नूर बहता रहा,
गुस्ताखियों का सिलसिला बदस्तूर चलता रहा।
'अंजुम '

*****

यूँही नहीं सन्नाटे पसरे हर तरफ
कुछ तो है जो कहीं खल रहा है
इक अजब सी सिहरन लगी है
न जाने दिल में क्या चल रहा है
अंधेरे में भटक गए अरमान मेरे
कहीं उम्मीद का दिया जल रहा हे
शाम हुई साँस चुराए और अंत तक
कोई मेरे जज़्बात को छल रहा है
कोई राह धुंधलाई और लौट कर
कहीं पे दबे पाँव कोई चल रहा है
मेरे पहलू से उठकर जो चला गया
दूर रहकर कोई हाथ मल रहा है
'अंजुम '

*****

वो ज़माना और था
और ये ज़माना और है
सब को सब की फिक्र थी
सब का सब पे गौर था
वो महफ़िलों का दौर था
ये फुरकतों का दौर है
कभी मयस्सरों का दौर था
अब मुनस्सरों का दौर है
कभी खूबियों का दौर था
अब खामियों का दौर है
कभी हासिलों का दौर था
अब नाकामियों का दौर है
कभी गुलफामियों का दौर था
अब फांस बन के रह गए
कभी आँख का तारा थे
अब अश्क बन के बह गए
'अंजुम '

*****

उस मयकदे का रस्ता, कोई कैसे भूल जाए
राहे वफ़ा में बन कर, कोई अपना लूट जाए
इल्ज़ाम ए मयकशी का, है मजा ही कुछ निराला
हर इक ज़ुबाँ पे रख कर, दुनिया ने है सम्भाला
दर्दे जिगर से कुछ पल को, 'अंजुम' सकून पाए
उस मयकदे का रस्ता, कोई कैसे भूल जाए
गजब गफलत में सो गया था मैं
ऐ काश कोई आके मुझे नींद से जगाए
भटकते हुए ज़िन्दगी की राहों में
न जाने कहाँ आ गया 'अंजुम ',
ऐसा भी कोई हो जो मुझको मेरा पता बताए
कोई हमराह, हमराज़, हम-आग़ोश तो हो
कोई मुझे ऐसे मेरे यार से मिलाए
'अंजुम '

*****

बस घड़ी की सुइयाँ
समय को खींचती जाती हैं,
खिड़की से आती धूप
दीवार पर फीकी छाया छोड़ती है।
चेहरे पर कोई रंग नहीं,
न आँखों में कोई सपना।
तन्हाई अब बोझ नहीं—
सिर्फ़ एक आदत है।
'अंजुम'

*****

विचारहीन मस्तिष्क,
जहाँ शोर भी खामोश है,
वहाँ कोई सवाल नहीं, कोई जवाब नहीं,
बस रिक्तता का साम्राज्य,
जहाँ समय भी ठहर जाता है।
अंतर्मन में द्वंद,
जैसे छाया अपने ही रूप से लड़े,
जैसे आईना आईने से टकराए,
पर कोई प्रतिकार नहीं,
कोई विरोध नहीं, 'अंजुम '
न प्रतिरोध, न प्रतिशोध।

*****

पत्ते भी ज़र्द होने लगे
हवा भी सर्द होने लगी
मौसम भी अंगड़ाई ले ही रहा है
ठंडक भी दस्तक देने लगी है
न पतझड़ न फिज़ा रास आई
कहीं सुकून की आहट न पाई
न फिज़ा न ख़िजा कुछ रास

शाख़ों से झड़ने लगे अरमान,
ख़्वाबों पे बर्फ़ जमने लगी है,
सूरज भी धुँध में छुपकर,
रौशनी अधूरी देने लगा है।

कदमों तले सरसराहट है,
सन्नाटा गहरी तान छेड़े,
दिल भी कहीं सिमटने लगे,
यादों की चादर ओढ़ने लगी है।
'अंजुम '

*****

न रूठने का हक है
न टूटने की इजाजत
न छूटने का हक है
न तोड़ सकूँ हिरासत
न रूठने का हक है,
न टूटने की इजाज़त,
हर लम्हा कैद-सा है,
न मिलती कोई राहत।
न छूटने का हक है,
न तोड़ सकूँ हिरासत,
ये ज़ंजीरें गहरी हैं,
ये तन्हाइयाँ सख़्त।
ख़्वाब भी डरते हैं,
सपनों का सफ़र है सूना,
दिल में हलचलें हैं,
पर चेहरा है मज़बूर-सा।
ज़िंदगी एक कैदख़ाना,
जिसमें साँसें भी गिरवी हैं,
चुप्पियाँ बोलती हैं यहाँ,
जहाँ खामोशियाँ भी क़ैदी हैं।
क्या तुम चाहोगे
कि मैं इस क़ैद से निकल पाऊँ?
या फिर इन बेड़ियों संग
ख़ुद ही अपना वजूद निभाऊँ?
'अंजुम''

*****

सवालों के जंगल में भटकता रहा,
जवाबों की पगडंडी मिली ही नहीं,
मैंने खुद को बाँट दिया हर किसी में,
पर मुझे मेरी हस्ती मिली ही नहीं।
अब सोचता हूँ जोड़ लूँ वो टुकड़े फिर,
शायद कोई तस्वीर बन जाए,
मेरे वजूद का खोया हुआ रंग,
किसी नए सवेरे में ढल जाए।

'अंजुम '

*****

चुस्की से पियो, हिचकी नहीं आती,
महफ़िल में कभी रुसवाई नहीं आती।

साक़ी की अदाओं में जादू उतर आता,
निगाहों में उसकी तन्हाई नहीं आती।

शबनम की तरह गिरते हैं जाम के कतरे,
तेज़ी से पियो तो रौनक नज़र नहीं आती।

आहिस्ता चलो तो सफ़र भी हसीं लगता,
भागो तो किसी राह में ठहराई नहीं आती।

मदहोशी में भी रखो अंदाज़े-वफ़ा "अंजुम",
वरना मोहब्बत में सच्चाई नहीं आती।

*****

"टूटे फूल"

कभी हम पर भी शबाब था
खुद पर बहुत ही इतराते थे
हर आने जाने वाले लोगों को
अपनी अदाओं से लुभाते थे
क्या तितली और क्या भंवरा
चमन में दोनों हम पर मंडराते थे
फिर धीरे धीरे भर यौवन
जीवन का आनन्द लिया
फिर शाम हुई सब दूर हुए
अब मुरझाना निश्चित था
डाली से टूट कर सुमन का
धरती पे गिर जाना निश्चित था
इल्म नहीं था कि यह यौवन
कुछ पल रहने वाला है
शाखा से टूट कर यह तेरा
अस्तित्व मिट्टी में मिलने वाला है

'अंजुम '

*****

दर्द खुद पर इतराता क्यूँ है,
ज़िन्दगी को आज़माता क्यूँ है।
टूटे शीशे भी कभी थे दिल ये,
टूटकर भी फिर डराता क्यूँ है।
दिल के जख्मों पर लगी ये धूल है,
हर कोई इनको हटाता क्यूँ है।
प्यार की ये राहें लगती हैं कठिन,
इश्क़ में हर कोई आता क्यूँ है।
बातें भी तो सच नहीं लगतीं मुझे,
हर कोई फिर भी सुनाता क्यूँ है।
जब भी आता है नया कोई यहाँ,
याद पुराना दिलाता क्यूँ है।
ये भी सच है कि वो अब मेरा नहीं,
मेरा होने का जताता क्यूँ है।
‘अंजुम ‘

*****

दौर ए खुदगर्जी है वो बेकसूर है
यूँही उम्मीद के दिए जलाए बैठा हूँ
होंगे इक बार तो मेहमान वो मेरे
दिल की महफ़िल सजाए बैठा हूँ
कतरा कतरा देखा पिघलता आसमान
फलक पे तारों को लुटाए बैठा हूँ
वो आएँ और मेरा मकान न दिखे
गली में भी शमा जलाए बैठा हूँ
कहीं भटक न जाए मेहमान मेरा
राह पर नज़रें जमाए बैठा हूँ
धड़कनें दर्द की दास्तान न कह दे
तड़प अपनी छिपाए बैठा हूँ
'अंजुम ' से ठोकर न खाए कोई
खुद को राहों से हटाए बैठा हूँ

*****

मेरी हस्ती पर सवाल न कर
मेरी हालत का ख्याल न कर
तू अपनी मंज़िल हासिल कर ले
मेरे मिट जाने का मलाल न कर

तेरे कदम न डगमगाएँ कहीं
मेरे जख्मों का बवाल न कर
मैं तन्हा सफ़र का आदी हूँ
मेरे साथ चलने का ख्याल न कर

मेरे आँसुओं को कहानी न दे
मेरी ख़ामोशी का जाल न कर
'अंजुम', मैं राख से भी उठ जाऊँगा
तू मेरी चिता का उजाल न कर

*****

यही अंजाम होना था
यही अंजाम पाया है
निहायत बेज़ुबान हूँ मैं
यह इल्ज़ाम पाया है
कहीं कुछ बोल न पाया
कहीं खामोश ही रहकर
वहीं एहसास यह अपने
दिल से खोल न पाया
दो अल्फाज की खातिर
यह जिद थाम रखी थी
कि आगाज किस का हो
इसी पर सब लुटाया है
'अंजुम '

*****

ढलती साँझ हूँ, गहराते अँधेरे से डरती हूँ
दिनभर के उजालों की थकी सी मुसाफ़िर हूँ,
कुछ अधूरे ख्वाबों की परछाई में बिखरती हूँ।
रंग थे कभी मेरे भी, सुरमई धूप की तरह,
अब बस यादों की राख़ हूँ, हल्की सी ठिठरती हूँ।
कभी प्रेम में भीगी, कभी आँखों से बरसी,
अब खामोशी की भाषा में हर साँस लिखती हूँ।
'अंजुम '

*****

ढलती शाम और लम्बा सफ़र
और तन्हा ही आगे बढ़ना है
आगे गहन अंधेरे हैं तो क्या
पहली बार तो नहीं चलना है
दूर कहीं हल्की सी किरण और
उसको जा कर मिलना है
फिर फिर सुबह होगी ऐसे ही
फिर फिर शाम को ढलना है
कायर न बन उससे नज़र मिला
पहली बार तो नहीं मिलना है
बस यूँही हर जन्म डरता सुमन
पहली बार तो नहीं मरना है. |
'अंजुम'

*****

दुनिया की साजिशों का तो कोई गम नहीं
देखे जो भीड़ में अपने तो ऑसू निकल पड़े
हंसने की हसरतों पर बेहद हकदार थे हम
हैरत हुई साथ ग़मों के काफिले ही चल पड़े
बेशक तेरा मुस्तकबिल अव्वल था मेरे लिए
दोयम रहकर हम ख़ुशी से नीचे फिसल पड़े
दर्जा ए हरारत अब तो कम हुआ जाता है
इल्म नहीं कि कब जिस्म शोलों से जल पड़े |

'अंजुम

*****

हर अँधेरे में उम्मीदों का उजाला रखना,
ज़िंदगी है तो दिलों में हौसला रखना।
चल पड़े हो तो थकावट से न घबराना,
हर कदम पर अपने जज़्बों को पाला रखना।
मुस्कुराकर ही कठिन राहों को जीता जाता,
होंठ पर चाहे दर्द हो, पर निवाला रखना।
जो भी आए फ़सले-ग़म, डट के गुजर जाएँगी,
बस यक़ीं का अपने अंदर इक हवाला रखना।
ज़िंदगी रूठे तो समझा-बुझा के मना लेना,
और दिल में हर किसी के लिए उजाला रखना।
क़द्र करो उन लम्हों की जो मिलते जाएँ,
हर धड़कन में मोहब्बत का रसाला रखना।
'अंजुम '

*****

साये भी साथ चलते थे, अब साये छूट जाते हैं,
तन्हाई की राहों में कदम खुद रुठ जाते हैं।
दिल के वीरान कमरे में कोई दस्तक नहीं आती,
ख़्वाबों के टूटने पर भी चेहरे मुस्कुराते हैं।
रातों की चुप्पियों में कुछ आवाज़ें तैरती हैं,
हम सुनना भी चाहें तो कदम डगमगाते हैं।
यादों की राख ओढ़े हुए बैठा हूँ चुपचाप,
जिन लम्हों को छुआ था वो ही दर्द बन जाते हैं।
अब “अंजुम” क्या शिकायत हो वक़्त और किस्मत से,
ज़ख़्मों की निगहबानी में ही दिन कट जाते हैं।

‘अंजुम ‘

*****

तर्के ताल्लुक की शदीद हसरत है अगर
न कभी होंगे रूबरू यह इकरार कर लो
कोई दावा नहीं किया कि मुकम्मल हूँ मैं
अपनी खामियों से भी नजर चार कर लो
फ़रिश्ते तुम भी नहीं अदना इंसान हूँ मैं भी
अपनी ज़मीर से ही सही ये इसरार कर लो
बाद में जो तारीफ करते हुए याद करोगे
अभी कुछ अच्छाइयों से तकरार कर लो
तस्वीर पर फूल ही फूल चढ़ाए जाओगे
फक्त इक सुमन दरकार है उपकार कर लो
'अंजुम '

*****

सहरा में भटक गए इक वजूद के साथ,
तन्हाई बसी रही ख़ौफ़-ए-वफ़ात के साथ।
हस्ती ढल गई उम्मीद-ए-मुलाक़ात के साथ,
रह गईं बस साँसें चंद ख़यालात के साथ।
आईना पूछता रहा चेहरे का सब हाल,
हम ख़ुद से ही जूझते रहे सवालात के साथ।
ज़िंदगी गुज़र गई दर्द-ए-हालात में,
हम मुस्कराते रहे टूटे जज़्बात के साथ।
तेरे नाम से रोशन हैं मेरी सब तहरीरें,
लिखता रहे दर्द-ए-दिल 'अंजुम' के साथ।

*****

खूब सज-धज के घर से चल दिए
फुर्सत के चंद पल जो पा सकूँ कहीं
दुनिया के बाज़ार में हर तरफ पाई
बस भावशून्य भागम-भाग दौड़धूप
बदहवास चेहरों पर कहीं सुकूँ नहीं
अफरा तफरी के माहौल नज़र आए
कहीं जीने की चाहत नहीं, जनूँ नहीं
दौलत की चकाचौंध में सब चल रहे
दिल की खुशियाँ कर के खूँ कहीं
भीड़तंत्र ने धकेल कर गिरा दिया
रौंदा गया न जाने ‘अंजुम ‘ कहीं

*****

हाथ लरज़ते और
पाँव डगमगाते हैं
ज़िन्दगी फिर भी
तेरी राह चले जाते हैं।
ज़ुबान खुलती नहीं
लब कंपकंपाते हैं
फिर भी हम अपनी
दास्ताँ कहे जाते हैं।
जज़्बात का दरिया
मुसलसल बह रहा
आनन्द मगन उसमें
हम डूबे चले जाते हैं।
दुश्मनों के शहर में
दोस्तों के तीर खा के
मुस्कराहट के साए में
सीने में दर्द दबे जाते हैं।
'अंजुम '

*****

बेटियाँ

बेटी विहीन घर समझिए अति शीघ्र वीरान
दो दो कुलों को तारती दोनों घर की शान
लक्ष्मी बहू को मानिए दीजै उस को मान
जीवन में ही स्वर्ग मिले ऐसा लीजो जान
पापा की परियां होती हैं पापा की हैं जान
बेटी के जो अश्क बहे पापा के हरते प्राण
शिकवा गिला नहीं करती न किसी को दोष
भीतर ही आंसू पी लेती रहती हैं खामोश
बहू यदि खामोश रहे तो उस के हैं संस्कार
दिल के दुखड़े प्रभु सुने जाने सब संसार
हृदय को दर्द न दीजिये चाहे कोई हो वो गैर
अबला व्यथा हरि सुने न लीजै उस से वैर
जिस के घर बेटी नहीं सुन लीजै यह बात
परियां पालन की नहीं सब की है औकात
रक्षा करता "सुमन" की बन के कांटा ढाल
ऐसे ही बेटी भी समझती पापा हैं रक्षपाल

'अंजुम '

*****

चेहरे की थकन को कोई पढ़ न सका यहाँ
दिल अपनी ही धड़कन से अक्सर डरता रहा यहाँ

रातों की स्याही में हम ढूँढ़ते रहे ख़ुद को
सवेरा भी आया तो किस्सा अधूरा रहा यहाँ

वादा तो किया था उसने लौटकर ज़रूर आएगा
हम अपनी ही साँसों से बस करता रहा यहाँ

राहों में खड़ी थी कुछ टूटे ख़्वाबों की धूल
क़दम जो बढ़ाया तो हर मंजर बिखरता रहा यहाँ

दुनिया की नज़र में हम कितने संभले हुए थे
अंदर का हर शीशा मगर टूटता रहा यहाँ

इल्तिज़ाओं की सूरत भी क़ाबिल न लगी उन्हें
हमने ही अपने जज़्बातों को आख़िर भरता रहा यहाँ

'अंजुम '

*****

माना हम लोग हैं अजनबी अबतक
पर मुझे देखके इतना मुस्कुराता क्या है
अल्फाज मेरे लबों पर आके जम से गये
नर्म गर्मी से पिघला दे, सताता क्या है
तूने आँखों में इबारत पढ़ ली, बताओ तो,
मेरे ख्याल समझके खुद पे इतराता क्या है
मेरी रुसवाई में तेरा भी है किरदार बहुत
इकबाल ए ज़ुर्म में तेरा जाता क्या है
धड़कनों पे इख़्तियार न सही ‘‘अंजुम ‘‘
इज़हार ए वफा पे तू शर्माता क्या है

*****

बेदिलों की महफ़िलों में पत्थरों के शहर में
ख़ुद को किस तरह सम्हाला ये अफ़साने क्या कहें
सहरा की तपती रेत और चिलचिलाती धूप में
सूखे बादल ने पुकारा ये अफ़साने क्या कहें
दनदनाती लहरों में लड़खड़ाती कश्तियाँ
दूर साहिल का इशारा ये अफ़साने क्या कहें
गुलफिशां की चाहतें और बिखरे काँटे राह में
यूँ चमन को मुड़ के देखा ये अफ़साने क्या कहें
गर्दिशों में रहा सितारा अँधेरी रात के सफ़र
खो गया राहों में 'अंजुम' ये अफ़साने क्या कहें

*****

इक सोच हूँ मैं या विचलित कोई विचारधारा
अंधेरों में भटकती, टूटी-सी एक धड़कन-धारा
फलक पर काँपता हूँ जैसे कोई अकेला सितारा
मुझे भी चाहिए मंज़िल का कोई छोटा-सा इशारा
दिशाहीन ज़िन्दगी है और सफ़र भी बेज़ुबाँ-सा
हर इक मोड़ पर मिलता है वीरानों का नज़ारा
बुझा-सा दिल, थका-सा मन, ये रातें भी गवाही दें
मज़ार पर जलता हूँ जैसे आख़िरी दम का चिराग़-सहारा
अंधेरों से निकलकर ढूँढता हूँ रोशनी का रास्ता
'अंजुम' भी हूँ, भटका हुआ लेकिन जुगनू-सा उजियारा

*****

साये भी साथ चलते थे, अब साये छूट जाते हैं,
तन्हाई की राहों में कदम खुद रुठ जाते हैं।
दिल के वीरान कमरे में कोई दस्तक नहीं आती,
ख़्वाबों के टूटने पर भी चेहरे मुस्कुराते हैं।
रातों की चुप्पियों में कुछ आवाज़ें तैरती हैं,
हम सुनना भी चाहें तो कदम डगमगाते हैं।
यादों की राख ओढ़े हुए बैठा हूँ चुपचाप,
जिन लम्हों को छुआ था वो ही दर्द बन जाते हैं।
अब "अंजुम" क्या शिकायत हो वक़्त और किस्मत से,
ज़ख़्मों की निगहबानी में ही दिन कट जाते हैं।

*****

इक आज़ाद परिन्दा हूँ
मुझे पिन्जरे में मत डालो
खुला है आसमाँ मेरा
मुझे तुम घर में मत पालो
जरा मैं भी तो देखूँ रे
फलक तेरी बुलंदी को
मैं बादल से भी खेलूँगा
किरण से भी रवि तेरी
इक तू ही तो है मेरा
अगर ऐ आसमाँ समझे
तेरी गोदी में खेलूँगा
कभी अठखेलियाँ करता
मगर ऐ आसमाँ मुझको
बाँहों में जकड़ डालो
ये आकाश ही मेरा है
अपने घर में मत पालो
मैं खुले आसमान की
ऊँचाईयों को छू तो लूँ
'अंजुम '

*****

**खामोश हसरत **

खामोशी में ही खामोश होकर
खामोश राह पर निकल जाऊँगा
आओ कुछ पल गुफ़्तगू कर लो
दिल के जज़्बात सुनुंगा सुनाऊँगा
मलाल न हो कि बहुत देर कर दी
आओ तो, पलक पांवड़े बिछाऊँगा
कुछ कहने की चाहत है और
कुछ सुनने की हसरत भी
दर्द कहने से यह कभी जाता नहीं
इक अहसास है महसूस कराऊँगा
इक दिन मेरी आवाज को तरसोगे
'अंजुम ' इस कद्र खामोश हो जाऊँगा

*****

हाथ लरज़ते और पाँव डगमगाते हैं
ज़िन्दगी फिर भी तेरी राह चले जाते हैं।
ज़ुबान खुलती नहीं लब कंपकंपाते हैं
फिर भी हम अपनी दास्ताँ कहे जाते हैं।
जज़्बात का दरिया मुसलसल बह रहा
मदहोश होकर उसमें डूबे चले जाते हैं।
दुश्मनों के शहर में दोस्तों के तीर खा के
मुस्कराहट के साए में सीने में दर्द दबे जाते हैं।
'अंजुम '

*****

बस यूँही

मन्द मन्द मुस्काए सजनी
जब भी नैन मिलाए सजनी
दिल की बात छिपाए सजनी
अब तो अपना कह दो ज़ालिम
क्यों इस कदर सताए सजनी
रूठ रूठ रह जाए साजन
कुछ पल साथ बिताए साजन
मन की बात बताए साजन
तभी तो कोई मनाए साजन
मन्द मन्द मुस्काए सजना
जब भी नैन मिलाए सजना
दिल की बात छिपाए सजना
अब तो अपना कह दो ज़ालिम
क्यों इस कदर सताए सजना
क्यूँ नयनों में सजते हो
हमरे तुम क्या लगते हो
तिरछी नज़र से तकते हो
मीठी बातों से ही ठगते हो

'अंजुम '

*****

उलझन

: स्वाल

बिखरी बिखरी जुल्फ है बिखरी बिखरी बात

बात संवारूं जुल्फ गिरे जुल्फ संवारूं बात

पहले किस को थाम लूं बिगड़ न जाए बात

इसी उलझन में सजन संग बीती जाए रात

: जवाब

जुल्फ सवारें सजन जी और मैं सवारूं बात

बिगड़ी यूँही बन गई आनन्द भरी हो रात

‘अंजुम ‘

*****

जुस्तजु*

कोई शिकवा नहीं तुमसे
शिकायत भी नहीं कोई
मेरे बारे में तुम अपने
ख्यालों को बदल डालो
कहीं मैं टूट न जाऊँ
नजर अंदाज न करना
कदम हिलने लगे कोई
तो बाँहों में जकड़ डालो
कोई हसरत मुझे लेकर
कभी जो सर उठाए तो
उसे उठने से पहले ही
दिल में तुम कुचल डालो
कि जिन का हल नहीं कोई
मेरे भी पास अब 'अंजुम '
ये बेहतर है कि तुम अपने
स्वालों को बदल डालो।

'अंजुम '

*****

*बस यूँही * &क्या कहूँ&^अभी तो^

तेरे रुख़्सार से ज़ुल्फ़ों का हटना बाक़ी है

मेरे ख़्यालों से उलझनें सिमटना बाकी हे

उम्मीद की चादर पर इक रंग भरके जीना

उसी की ओट लेकर उम्र कटना बाकी है

छाँव बनकर कोई दीवार तो मिल जाए

जलती धूप में जलकर हटना बाक़ी है

अभी कुछ दिन बाद थक के टूट जाऊँगा

ज़िन्दगी की राहों में भटकना बाक़ी है

ख़ुद ही ऐसे टूटके जमींदोज हो जाऊँगा

गर्दिशों में ‘अंजुम ‘ का मिटना बाक़ी है
बस यूँही*
&क्या कहूँ&
^और^

हर पल ज़िन्दगी अपनी ही रहे, यह जरूरी तो नहीं

कभी-कभार इस का इम्तिहान भी लेते रहिए,

इस को जीना कहीं मजबूरी तो नहीं

कभी यूँ ही दोस्तों से बात करते रहिए,

कोई खास मसले पर गुफ़्तगू हो, यह जरूरी तो नहीं

हर शख्स का चेहरा कुछ न कुछ कहता है

आप से मुलाक़ात उसकी मजबूरी तो नहीं,

कुछ लाशें जहान से नंगी भी उठती हैं 'अंजुम '

हर लाश को कफ़न मिल जाए यह जरूरी तो नहीं
बस यूँही

&क्या कहूँ&

^इल्तिज़ा^

कहीं मिल न जाना
मुझे हादसों से डर लगता है
ज़िन्दगी में नए पुराने
सब रास्तों से डर लगता है
तन्हा सफर अच्छा है
लुटते काफ़िलों से डर लगता है
इतने करीब न आना
कि फिर दूर होने पर
फलक से टूटे ‘अंजुम ‘ को
मिले फासलों से डर लगता है

*****

ज़िन्दगी

बेढंगी ही सही, अपनी चाल पे खुश हूँ
बेतरतीब ज़िंदगी, तेरे हाल पे खुश हूँ
मुफ़लिसी का दौर भी मुस्कुरा के गुजरा
हासिल ए तकदीर ज़रो माल पे खुश हूँ
फ़िदा इक मुस्कान पर ही हो जाता था
तेरे निगाहें फेरने के कमाल पे खुश हूँ
तुझे दीदार ए शौक का जुनून था इतना
मोड़ मुड़ने के अंदाज ए हाल पे खुश हूँ
रूहे मुहब्बत को कभी समझे नहीं तुम
तेरे जहाने दौलतों के अंबार पे खुश हूँ
भूलकर भी तुझे कभी भूला नहीं हूँ मैं
मुझ पर तेरे ख़्याले इख्तियार पे खुश हूँ
न था तेरे पहलू में शबे ज़िन्दगी गुजरे
हासिल ए तकदीर के कमाल पे खुश हूँ
कायम रहा फुरकत के बाद भी जो तेरा
"अंजुम" तेरे उस हुस्नो-जमाल पे खुश हूँ
बस यूँही

&क्या कहूँ&

*****

^उसूल^

अदबो आदाब के सलीके भी तो होते हैं जनाब
ज़माने में हर ख़ामोश शख्स बेज़ुबां नहीं होता
मुमकिन नहीं कि हर शै हासिले हर बशर हो
कहीं पांव ज़मीन पे नहीं कहीं आसमान नहीं होता
जो हर पल साया बनकर साथ ही रहते थे
वो कब छोड़ेंगे इसका तो ग़ुमान नहीं होता
कुछ लम्हे तेरी महफ़िल में गुजारे थे
मगर हर जगह तो आशियाँ नहीं होता
ज़रूरी नहीं हर शख़्स मशहूर ओ मारूफ हो
अक्सर ज़माने में सब का निशान नहीं होता

'अंजुम '

*****

बस यूँही

&क्या कहूँ&

^मशविरा^

तर्के ताल्लुक न हो आप का
बस ज़ुबां को घुमा दीजिए
ज़िन्दगी तो बहुत आसान है
ग़िले शिकवे मिटा दीजिए
दौलतों की कमी हो अगर
इज़्ज़तों को कमा लीजिए
वक्ते रुखसत सुकून आएगा
सब की दिल से दुआ लीजिए
अपने अल्फ़ाज़ क़ातिल न हों
ऐसी सरहद बना लीजिए
रुठ जाएं जो कोई जीते जी
गले उनको लगा लीजिए
'गर चमन में सुमन न मिले
कांटों से ही निभा लीजिए
'अंजुम '
*बस यूँही&

*****

^कभी^

चल जिन्दगी फिर से बात करते हैं
जो हो सके तो मुलाकात करते हैं
कुछ शिकवे तुम्हें भी तो होंगे न
इक दूजे की दूर शिकायात करते हैं
कब से रूठ कर दूर जा बैठी हो
पहले से बेहतर हालात करते हैं
याद है दोनों में बेइन्तहा मुहब्बत थी
सांझे अपने अपने जज़्बात करते हैं
अल्फाज़ में न उलझे ताल्लुक अपने
ऐसे ही कुछ एहतियात करते हैं
चल जिन्दगी फिर से बात करते हैं
जो हो सके तो मुलाकात करते हैं

'अंज़ुम '

*****

आया जोश उफान पर

वफ़ाओं के तूफ़ान पर

क्या मिला

चले तेरे कदमों के निशान पर

हम भटके राह बूझ जान कर

क्या मिला

कुंडलियों का मिलान कर

तक़दीर का अपमान कर

क्या मिला

'अंजुम'

*****

कटने को हर लम्हा उम्र गुजर ही जाएगी
महफ़िलों से इसे ज़िन्दगी बनाकर तो देखो
मिज़ाज पुरसी का एहसान किए जाते हो
कभी यूँही दिल पर हाथ लगाकर तो देखो
फासलों की बस्तियाँ बना कर भी जी लेंगे
मिट भी जाएँगी उन को मिटाकर तो देखो
आईना हक़ीक़त बयाँ कर ही देगा 'अंजुम'
तन्हाई में उस से नज़र मिला कर तो देखो

'अंजुम'

*****

कहीं दूर मेरा इक घोंसला था
इक तिनका देख के याद आया
कभी वो भी था मेरा अपना
इक फ़ासला देख के याद आया
कोई राही कहीँ पर भटका था
इक कारवाँ देख के याद आया
परवाज़ परिन्दे की बुलंद रही
इक आसमान देख के याद आया
कभी मरकज़े महफ़िल वो भी था
गर्दिशे 'अंजुम ' देख के याद आया
‘अंजुम’

*****

बंद दरवाज़े
अधूरी दास्तानों की गूंज समेटे,
खामोशी में जैसे राज़ छिपाए बैठे।
दरीचे
धूप के टुकड़े भीतर उतारते,
मगर हवाओं को अब भी तरसते।
सूने गलियारे
कदमों की आहट ढूँढते भटकते,
बीते लम्हों की परछाइयों में सिमटते।
दालान
स्मृतियों का आँगन,
जहाँ सन्नाटा भी अपनी कहानी सुनाता।

अंजुम'

*****

कंक्रीट के जंगलों में
आँखों में रंगीन सपने
लाखों अजनबी देखते
चमड़े से ढकी हड्डियाँ
मांस के लोथड़े जैसे
सब ओर चल रहे हैं
नकली मुस्कान लिए
नकली पहचान लिए
दिल में अरमान लिए
साँसों में तूफ़ान लिए
मांस के लोथड़े जैसे
सब ओर चल रहे हैं
'अंजुम '

*****

कैसे कह दूँ दर्द छिपाकर
मेरी बेचैनियों की वजह तुम हो
न नज़र मिलाते
न पहचान होती
न तुम पास आते
न महफ़िल जमाते
न वादा वफ़ा करते
न उसे तोड़ जाते
मेरी बेचैनियों की वजह तुम हो
न मुलाक़ात होती
न पहचान होती
न इंतज़ार होता
दिल बेकरार होता
मेरी बेचैनियों की वजह तुम हो
न शिकवा ही होता
न शिकायत ही होती
कोई राह न तकते
मिलने की इनायत ही होती
कैसे कह दूँ दर्द छिपाकर
मेरी बेचैनियों की वजह तुम हो
मेरी बेचैनियों की वजह तुम।
अंजुम

*****

रुस्वाई भी इश्क़ कम न कर पाई,
दिल में जो लौ जली, वो बुझ न पाई।
ज़माने ने लाखों इल्ज़ाम लगाए,
हर महफ़िल में मेरी हस्ती को मिटाया,
लोग हंसते रहे, ताने कसते रहे,
मगर तेरी सूरत निगाहों से हट न पाई,
रुस्वाई भी इश्क़ कम न कर पाई।
शर्मिंदगी का पर्दा भी आंखों पे आया,
तेरा नाम होठों पर लाने से मैं कतराया,
छिपाया राज़ दुनिया से, पर ख़ुद से क्या छिपाना,
तेरी यादों से मेरी रातें सजती रहीं,
रूह पर तेरी छाप थी, जो कभी उतर न पाई,
रुस्वाई भी इश्क़ कम न कर पाई।
इस प्रेम की कीमत हमने अदा की है,
हर ख़ुशी, हर चैन को दिल से जुदा की है,
मगर बदले में जो मिला वो इबादत से कम न था,
तेरा एहसास हर साँस में शामिल रहा,
इस आग को कोई आँधी भी छू न पाई,
रुस्वाई भी इश्क़ कम न कर पाई,
दिल में जो लौ जली, वो बुझ न पाई। ‘अंजुम ‘
*बस यूँही *

*****

&क्या कहूँ&

^अगर^

चेहरा बेनूर हुआ तो क्या
आँखों में चमक तो बाकी है
चाहे कितना भी टूटा हो
दिल में धड़क तो बाकी है
तुम तक न पहुँची बात मेरी
आवाज में कड़क तो बाकी है
नादान हसरतों की नाकामी
रुसवाईयों का चर्चा तो बाकी है
‘अंजुम ‘

*****

बंद दरवाज़े
अधूरी दास्तानों की गूंज समेटे,
खामोशी में जैसे राज़ छिपाए बैठे।
दरीचे
धूप के टुकड़े भीतर उतारते,
मगर हवाओं को अब भी तरसते।
सूने गलियारे
कदमों की आहट ढूँढते भटकते,
बीते लम्हों की परछाइयों में सिमटते।
दालान
स्मृतियों का आँगन,
जहाँ सन्नाटा भी अपनी कहानी सुनाता।
'अंजुम '

*****

मेरी हालत पे अब किसी की नज़र ठहरती नहीं,
टूटे जिगर की दास्ताँ कोई बयाँ करती नहीं।
ख़्वाबों की चादर में बस सिलवटें महफ़ूज़ हैं,
रौशनी भी दिल के ज़ख़्मों को भरती नहीं।
राहें भी थक गईं मेरी मंज़िल को ढूँढते,
अब सदा वहाँ से सफ़र को गुज़रती नहीं।
'अंजुम' तेरा ज़िक्र आया तो अश्क छलक आये,
तेरी याद कोई कमी अब छोड़ती नहीं।
लबों पे हँसी, दिल में तूफ़ान का आलम है,
ये रियाज़त-ए-दर्द दुनिया को ख़बरती नहीं।
'अंजुम '

*****

तन्हाई का आलम है, दिल फिर से बुझा-बुझा,
रातों का हर लम्हा अब मुझमें ही धँसा-धँसा।
सन्नाटे की सीढ़ियों पर बैठा हूँ थककर मैं,
ख़्वाबों का दरवाज़ा भी लगता है बंद-सा।
यादों की परतों में कुछ मौसम सोए हुए,
छूते ही टूट जाते हैं काँच की तरह कसा-कसा।
लोगों की महफ़िल में भी दिल खाली पड़ा रहा,
चेहरों के बाज़ार में कोई अपना न मिला-सा।
दर्द की तल्ख़ बोली अब रग-रग में बस गई,
हर शब्द है जैसे कोई तीर-सा धँसा-धँसा।
और 'अंजुम' ये कैसी बेक़रारी दिल के पास—
जितना भागूँ इससे, उतना ही ये फंसा-फंसा।

*****

यादों का इक जंगल है फैला
और मैं भटक रहा इधर-उधर,
कभी कोई बचपन की याद
बाँह पकड़कर ले जाती किधर।
मासूम-सी हँसी थमाती है
रंगीन सपनों का इक नगर,
कभी खिलौने थमा देती है
फिर छीन लेने का वही मंज़र।
कच्ची गलियों में दौड़ता साया
घुटनों की चोट, माँ का हुनर,
फूँक में सिमट जाती थी पीड़ा
आँचल था पूरा का पूरा असर।
कभी स्कूल की घंटी बजती
कापी में कैद होते ख़्वाब,
रास्ते छोटे, शामें लम्बी
जेब में सिक्के, आँखों में आब।
यादों का ये जंगल भी क्या है
छाँह भी देता, करता है डर,
जिस मोड़ पे ठहर कर देखूँ
खुद से मिलता हूँ हर पहर।
मैं चलता हूँ, जंगल चलता
बीते लम्हे बनते रहबर,
कुछ यादें ज़ख़्मों जैसी गहरी
कुछ मरहम बन जाती अक्सर।
'अंजुम '

*****

कान में कह गई ज़िन्दगी जाते जाते
थक गई हूँ ज़माने के रिश्ते निभाते
किसी के चेहरे पे हँसी अब तो आए
देखा मुझे न आईने ने कभी मुस्कुराते
ख़ामोशियाँ इस क़दर हावी हो गईं
ख़ुद से दिल ही दिल में रहे बतियाते
कभी दिल से वो नहीं मेरे पास बैठा
न कोई था जिस पर हम हक जताते
न हम-आग़ोश और न हमराज़ मिला
दिल को हम ख़ुद ही रहे गम बताते
'अंजुम '

*****

परिन्दों की परवाज़ बेचैन है जैसे
इक और आसमान गिरने को है
ज़मीन की मिट्टी में थरथराहट है
शायद इक बड़ा पेड़ गिरने को है
चिराग़ों की घबराहट से ज़ाहिर है
कोई बड़ा सा तूफ़ान चलने को है
आग़ बुझ गई धुआँ उठ रहा है
शायद कोई कारवाँ चलने को है
पाप की गठरी बाँध ले ‘अंजुम ‘
तेरा वजूद मिट्टी में मिलने को है

*****

*बस यूँही *

&क्या कहूँ&^मौजूद^

गर्ज़-परस्ती में इंसान के किरदार बदलते देखे हैं,
ज़रा-सी बात पर लोगों के हक़दार बदलते देखे हैं।
जहाँ सच्चाई थी, वहाँ अब दिखावा है बस,
हमने नक़ाबों के पीछे संसार बदलते देखे हैं।
वफ़ाओं की किताबें अब धूल खा रही हैं,
हमने अरमानों के बाज़ार बदलते देखे हैं।

‘अंजुम ‘

*****

मैं कभी ख़ुद में ख़ुद को न ढूँढ पाया,
ज़माने का दावा कि अच्छे से जानते हैं मुझे
मेरी ख़ामोशियों में भी हलचलें हैं कितनी,
वो लोग मुस्कुराकर बस पढ़ते हैं मुझे।
मैंने आईने से भी अपना रिश्ता ढीला रखा,
पर परछाइयाँ अक्सर पहचान लेती हैं मुझे।
सफ़र में टूटे हुए लम्हों का बोझ साथ रहा,
फिर भी क्यों लगता है कि सब भूल गए हैं मुझे।
मैंने दर्द को भी सीने में मेहमान-सा रखा,
और दुनिया समझी कि फ़क़त खुशियाँ मिलती हैं मुझे।
एक रोज़ शायद मैं अपनी ही राह पा जाऊँ,
तब ये भीड़ समझेगी कहाँ खो देते हैं मुझे।

'अंजुम

*****

कहीं पर दर्द ठहरा है
किसी मुस्कान के पीछे
कहीं दुश्मन न ठहरा हो
किसी मेहमान के पीछे
कहीं शातिर न हो कोई
किसी नादान के पीछे
कहीं मतलब न हो कोई
किसी पहचान के पीछे
अलगर्ज नहीं जो रुबरू
किसी एहसान के पीछे
अरमान भरा दिल जला है
किसी श्मशान के नीचे
साहिलों को डुबाने की
साजिश तय है 'अंजुम '
सागर के तूफ़ान के पीछे

*****

चेहरा तो अक्सर, गुनहगार छिपाते हैं
हम तो पहले दिन से ही, बेनक़ाब थे
मुफलिसी का दौर है, तो क्या हुआ
कभी खुद दिल से, हम भी नवाब थे
गुल उजाड़े, चमन वीरान क्यों किया
उन से यह पूछा, तो वो लाजवाब थे
दिल ही दिल में, अरमान जलाए और
टूट कर सौंप दिए, वो कितने ख्वाब थे
खेल तो देखिए, तक़दीर का 'अंजुम '
हिसाब मांगने वाले, ख़ुद बेहिसाब थे

*****

किसी से कोई सरोकार नहीं
यूँ तो बस्ती में इंसान बहुत हैं
खुलकर कोई हंसता ही नहीं
मुख पे नकली मुस्कान बहुत हैं
जीने की वजह ही नहीं मगर
दिल में जीने के अरमान बहुत हैं
गले से लग कर कोई सुकून दे वर्ना
आराधना को भगवान बहुत है

*****

सब का अपना इक, अलग वजूद होता है
खामोशियों को तोड़ना, मेरी फितरत नहीं
फासले तो जाहिर हैं,नज़र ही आते नहीं
दूरी बनाए रखना, ये तो मेरी आदत नहीं
ज़िन्दगी काटने की, ज़िद को पाल रखा हैं
वर्ना जीने की तो, अब कोई हसरत नहीं
मुद्दत हुई खुल कर, मुस्कान लबों ने देखी
कहीं दूर तक अंदर, बची और चाहत नहीं
खुद रुठ कर चली गईं, खुशियां 'अंजुम '
ग़मों से तो मेरी और, कोई अदावत नहीं

*****

हासिल ए दौलत हों ज़माने भर की
फिर सोचता हूँ उस के बाद क्या
सजा कर इक खूबसूरत आशियाना
फिर सोचता हूँ उस के बाद क्या
छूकर दुनिया-भर का हर कोना
फिर सोचता हूँ उस के बाद क्या
खोल दूँ दिल के दरवाजे सब के लिए
फिर सोचता हूँ उस के बाद क्या
'ग़र फिर भी सुकून न मिला 'अंजुम '
फिर सोचता हूँ उस के बाद क्या

*****

मयकशी के शौक ने बेगैरत बना दिया
जब अश्क न मिले तो प्याला थमा दिया
कोई महफ़िल हो, साकी कोई भी हो
दर्द की खुशबू ने, वही रस्ता बता दिया
शरीक हुए तेरी महफ़िल में बड़े गुरूर से
बेमुरव्वत हूँ मैं, मुझे शीशा दिखा दिया
मंज़िल ए मकसूद की तलाश लिए दिल में
चलते रहे बेमकसद आवारा बना दिया
कहीं भटक न जाए तू अंधेरों में 'अंजुम '
राहें रौशन रहें , हमने घर ही जला दिया

*****

दीवारें बोल उठेंगी, इक बार उन्हें बुला कर तो देखो
बिना कहे भी समझ जाती हैं, दर्द छिपाकर तो देखो
तुम्हारे आँसू भी पी जाएंगी, तुम अश्क बहा कर तो देखो
दिल का बोझ हल्का हो जाएगा, दास्ताने गम सुनाकर तो देखो
बाँहों में भी जकड़ लेंगी, गले से लगाकर तो देखो
ऐसी वफ़ा निभाएंगी 'अंजुम ' बेवफ़ा को भुला कर तो देखो

*****

इक युग बीत गया बिछड़े
फिर से बात करो न माँ
थकन हो रही है सिर में
प्यार से हाथ धरो न माँ
मुद्दत हुई चैन से सोए हुए
अपनी गोदी सर धरो न माँ
तरस गया हूँ किसी प्यार को
पहले सा लाड करो न माँ
बोझ बन गई आज ज़िन्दगी
गोद ले हल्का भार करो न माँ

*****

कमज़ोर इंसान का सब्र रबर बैंड सा होता है,
खिंचता है…चुपचाप खिंचता है,
बिना आवाज़ किए, बिना शिकायत किए।
लोग समझते हैं कि इसमें जान ही नहीं,
इसे जितना चाहो खींच लो,
यह टूटेगा भी तो आवाज़ नहीं करेगा।
मगर हर खिंचाव की एक हद होती है,
हर चुप्पी के पीछे एक सरहद होती है।
जब ज़ुल्म उँगलियों से हद से ज़्यादा खिंचता है,
तो वही रबर बैंड अचानक पलटता है—
सीधे नाक पर आकर लगता है,
और फिर…दर्द से कराह उठता है
वो शख़्स जिसे लगता था सामने वाला कमज़ोर है।
सब्र कमज़ोरी नहीं होता,
बस देर से जवाब देता है।

*****

सपने चुभते हैं खुली आँख के,
और नखरे दिखाते हैं—
नींद की ओट में आते नहीं,
दिन में मगर सताते हैं।
छू लो तो धुएँ से उड़ जाएँ,
थामो तो हाथ जलाते हैं,
ये ख़्वाब भी अजीब मिज़ाज के—
अपने होकर भी भरमाते हैं।
कभी आस बनकर महक उठते,
कभी टीस बनकर रह जाते हैं,
सपने चुभते हैं खुली आँख के,
और उम्र भर आज़माते हैं।

*****

ढूँढ़ते रहे हम तो हर मोड़ पर निशाँ कोई
वक़्त की सराय में मिलता न कारवाँ कोई
दिल की तहों में दबी आवाज़ भी थक गई
सुनता नहीं था रूह का अब अरमान कोई
चलते हुए ये राह बड़ी खामोश हो गई
कदमों से पूछता रहा—क्यूँ है जहाँ कोई?
साए भी साथ छोड़ गए धूप की नज़र में
अब तो उजालों में भी लगता है धुंधलाँ कोई
काग़ज़ पे दर्ज कितने ही किस्से थे रात भर
लब पर मगर ठहरा न इक बयान कोई
हमने जो दर्द ओढ़ा था, दुनिया ने क्या समझा
चेहरे पे देख पाता कहाँ हर इंसाँ कोई
'अंजुम '

*****

चमन छोड़कर वो क्या गए 'अंजुम '
खूबसूरत बहारों का दम घुटता है
अभी कुछ पल और जीना है मुझ को
ज़िन्दग़ी तेरे सवालों से दम घुटता है
जहां पर मरकजे महफ़िल था कभी
अब तो उन ख्यालों से दम घुटता है
बहुत कोशिशें नाकाम भी साबित हुईं
बहरहाल कभी-कभार कम घुटता है
इंतज़ार ए वफ़ात कम हुआ जाता है
बदन से लगता अब तो दम छुटता है

*****

मैं पंछी अनेक डाल का
कभी इधर कभी उधर
कभी यहाँ कभी वहाँ
फिरुँ न जाने कहाँ कहाँ
मेरा कोई एक ठौर नहीं
यूँ तो है मेरा सारा जहाँ
इक चमन से उड़ान ली
फिर दूजे की तलाश और
थकन भरे पंख फैलाकर
जीने से ज़िन्दगी हताश है
धुंधलाई सी आँख और
तिमिर उजाला निगल रहा
भयभीत मन निराश है

*****

तलाश है उसकी ही सफर में शाम से पहले
जिस का जिक्र होता था मेरे नाम से पहले
हर महफ़िल में मरकज़े गुफ्तगू हम ही होते थे
चल दिया सरे राह बे वफ़ाई के इल्ज़ाम से पहले
यकीन था कि सफ़ीना साहिल पा ही जाएगी
किनारा कर गया माझी इक तूफ़ान से पहले
'अंजुम'

*****

सूना आंगन सूना मन बिन अकस सूना दर्पण
कौन सुने व्यथा मेरी कौन समय कर दे अर्पण
सूना आँगन, सूना मन बिन अकस सूना दर्पण,
चारों ओर पसरी खामोशी जैसे थम गया हो जीवन।
बिखरे सपनों की सरगोशी रूठी-सी हर इक धड़कन,
कोई पुकारे मन के भीतर पर मिलती बस अपनी तड़पन।
इस रिक्ति को भर दे कोई छू ले मिट्टी का कंपन,
थाम ले हथेली यूँ पलभर जैसे मिल जाए सावन।
अंततः थककर ये मन बोले—छोड़ दे हर दुविधा-बंधन,
जो भी है अपना, दे दे उसको पूरी निष्ठा, पूरा समर्पण।

*****

कुछ अपने और कुछ पराए हैं,जो दर्द मैंने सीने से लगाए हैं
आवारा भटक रहे थे राहों में,वो सब दर्द भी अपने बनाए हैं
रंजो ग़म की महफ़िल सजी थी,वाह वाह कह के अश्क बहाए हैं
शरीक हुए फिर चुपचाप दूर हुए,कैसे कह दें तन्हाई के सताए हैं
तेरे मुस्तकिल की राह आसान हो,अपने हाल के ख़्वाब जलाए हैं
कभी जिया कभी मर मर के जिया,बस यूँही साँसों के बोझ उठाए हैं
एहसान कर गई ज़िन्दगी मुझ पर,साथ चलने के भी नाज़ उठाए हैं
ऐ ग़मों इस्तकबाल है तुम्हारा,मेरी चौखट पर आप आए हैं
अँधेरे उजाले चोली दामन होते हैं,उम्मीद है खुशी भी साथ लाए हैं
टूटकर बिखरने की भी हद होती है,खाक बनाकर हमें हवा में उड़ाए हैं
यूँ तो सब कलाम-ए-रूह मेरे हैं,कुछ दर्द किसी आँख से चुराए हैं
ग़ैरों से साजिश में अपने भी थे, 'अंजुम ' को अर्श से फर्श पे लाए हैं

*****

अक्सर^

ठोकरें और रास्तों का गठबंधन
मुसाफ़िर को रोक सकते नहीं
पलभर का साथ औ' उम्मीद की लौ
अँधेरे में भी कदम कहीं रुकते नहीं
अगर वफ़ा की वजह तुम न होते
तो 'अंजुम' ये अश्क यूँही रुकते नहीं
वफ़ा का सिला वफ़ा ही होता है
नाहक ताउम्र यह वहम पाले रहे
न समझ पाया तेरी बेरुखी कभी
फिजूल इक ताल्लुक संभाले रहे
अँधेरे और गहराए कुछ नज़र गई
दिल भी जला पर दूर उजाले रहे
उम्मीद लगाए हुए ठहर गए अरमान
गली के मोड़ पर नज़र डेरे डाले रहे
तारों की छाँव और फल्क पे नज़र
'अंजुम ' गर्दिशों के ही हवाले रहे

*****

बेमुरव्वत, बेहया ज़िन्दगी —
छुटती भी नहीं, मिटती भी नहीं,
हर मोड़ पर ठहर कर सोचती है,
पर किसी राह मुड़ती भी नहीं।

दर–दर की ठोकरों से टूटी सही,
मगर ये कमबख़्त गिरती भी नहीं,
ज़ख़्मों को गहना बना लिया इसने,
दर्द से अब सिहरती भी नहीं।

कभी उम्मीदों की रौशनी में जली,
कभी ग़म की रातों में सुलगी सही,
अब तो अपने ही साए से डरती है,
पर किसी से खुलकर कहती भी नहीं।
'अंजुम '

*****

कभी खुलकर सीने से लगा लो मुझ को
ग़म ए जहान की तन्हाई से छुपा लो मुझ को
फिर चुपचाप कहीं भीड़ में गुम न हो जाऊँ
रख के पलकों में दुनिया से चुरा लो मुझ को
नाकाम हसरतों के जनाजे उठते हैं दिल में
इस वहशत ए हालात से बचा लो मुझ को
एक भटकी हुई बहार हूँ किसी गुलशन की
हो सके अपने चमन में सजा लो मुझ को
अब तो अपना साया भी डराता है अक्सर
हो सके तो इन उजालों से हटा लो मुझ को
मैं तो ख़ुद का भी कभी हो न सका अपना
हो सके तो तुम ही अपना बना लो मुझ को
पल भर को दिल की बात सुन लो 'अंजुम'
रूठ कर चाहे जितना भी सता लो मुझ को

*****

दिमाग के जाले

दिमाग के जाले हर कोने में फैले हैं,
यादों की मक्खियाँ उनमें फँसी बैठी हैं।
कुछ अधूरे ख़्वाब पंख फड़फड़ाते हैं,
तो कुछ अफ़सोस चुपचाप सिमट जाते हैं।

सोचों की नमी से धूल गीली हो जाती है,
पुराने किस्सों से हवा भारी हो जाती है।
कभी उम्मीद की रोशनी छनकर आती है,
तो कभी अँधेरों में साँस रुक जाती है।

इन जालों को कोई झाड़े तो सुकून मिले,
नई किरणों से पुराना अंधकार धुले।
पर कौन हिम्मत करे इन गिरहों को खोलने की,
जब आदत हो चुकी हो चुपचाप टटोलने की।
दिमाग के जाले भी दिल की तरह ज़िद्दी हैं,
साफ़ करो तो फिर वही सिलवटें बन जाती हैं।
पर शायद इन्हीं में छुपा है एक सच गहरा,
जालों के पार ही दिखता है आसमान सुनहरा।

*****

अब मैं कभी खाने के लिए रूठता नहीं,
क्योंकि मेरे नखरे उठाने वाली
प्यार से मना कर खिलाने वाली
"अन्नपूर्णा" मेरे साथ नहीं
और न कोई जिद करता हूँ
सब कुछ ले कर देने वाला
हर बात मान लेने वाला
"कल्पतरु" मेरे साथ नहीं

*****

अमरत्व की भावना ही दम्भ का अवलम्ब है
आसमान पे थूकना भी विनाश का प्रारंभ है
जो उगा है वो मिटेगा क्या घास या कदम्ब है
कालचक्र से न बचेगा समय का विलम्ब है
मृत्यु बंधी पाए से ये दशानन का अहंकार था
विधि के विधान से ही हुआ रामअवतार था
कंस का विध्वंस हुआ फिर कृष्ण अवतार से
कालबलि शक्तिमान हरि नरसिंह अवतार थे
'अंजुम '

*****

मौन में ही मन का दर्पण साफ़ होता है,
विचारों का कोलाहल क्षीण होता है।
भीतर का शाश्वत प्रकाश जाग उठता है,
और आत्मा अनंत में विलीन होता है।
इसलिए मौन से डरो नहीं, उसे अपनाओ,
यह तप नहीं, यह थकान नहीं,
यह तो अमर शांति का सागर है,
मौन सच में अनंत का द्वार है।
'अंजुम '

*****

जो तन्हा शाम है तेरी
मेरी सदाओं से परेशान न हो
इक दिन खामोश हो जाऊँगा
तेरी फुरकत में जगता तो हूँ
कभी गहरी नींद में सो जाऊँगा
गो आज ज़िक्र है मेरा जमाने में
"वो" हुआ करता था हो जाऊँगा
'अंजुम ' अपने फलक की चाह में
अपनी ज़िन्दगी पे ही रो जाऊँगा

*****

ख़ुद की ख़ुद में तलाश क्यों है, ये तो मेरा किरदार तो नहीं
राह में जो धुंध छा गई है, वह कोई दीवार तो नहीं

वक़्त का कारवाँ है जारी, क़द्र किसने यहाँ की की है
ज़िन्दगी का सफ़र ही ऐसा, कोई भी दरबार तो नहीं

रूह को रूह की ख़बर कब थी, जिस्म से रिश्ते बने हैं सब
आदमीयत का नाम ही काफ़ी, नामों का बाज़ार तो नहीं

ख़्वाब देखे तो टूट जाते हैं, ख़्वाब टूटे तो जी भी लेते
इक हक़ीक़त ही सच है बाक़ी, सब कोई तकरार तो नहीं

"अंजुम" इस दायरों के जग में, बे-सबब घूमता है इंसाँ
इक तसल्ली है ढूँढ लेता, वरना कुछ असरार तो नहीं

*****

वक्त की मार से जब हालात बदल जाते हैं
अक्सर ही ज़माने के ख्यालात बदल जाते हैं
धड़कनों में बसने वालों के जज़्बात बदल जाते हैं
नजरिए और नज़रों के स्वालात बदल जाते हैं
टूटकर चाहने वाले वक्ते मुलाकात बदल जाते हैं
ज़माने भर में प्यार लुटाकर ‘अंजुम ‘ की खैरात बदल जाते हैं

*****

जो लिखता हूँ तो लिखता हूँ
नहीं लिखता तो रोता हूँ
जो लिखता हूँ तो लिखता हूँ
जो लिखता हूँ तो रोता हूँ
जो लिखता हूँ वो पढ़ता हूँ
जो पढ़ता हूँ तो रोता हूँ
तेरी जुल्फों के साए में
कभी इक शब गुजारी थी
उन्हीं यादों के साए में
जीने से भी डरता हूँ
कभी तुम रूठ जाते हो
कभी तुम मान जाते हो
तस्सवुर में कभी तुम से
जो खुलके बात करता हूँ
'अंजुम '

*****

माँ मुझे जी भर के सोना है
फिर से वही लोरी सुना दे न
तेरी गोद में बैठकर रोना है
फिर मीठी डाँट से बुला ले न
बहुत थकान सी लग रही है
अपनेआँचल में मुझे छुपा ले न
डर से तेरे पास आकर रहूँ
फिर से वैसी कोई सजा दे न
बहुत रो रहा हूँ सच में माँ
फिर से आकर चुप करा दे न

*****

तिरस्कृत मैं, पुरस्कृत मृत्यु

नज़रें चुराई सबने मुझसे,
जैसे मैं कोई बोझ था।
हर मुस्कान के पीछे ताना,
हर मौन में एक साज़िश थी।

मैंने जो भी सच कहा,
वो कड़वा कहकर ठुकरा दिया।
मैंने जो भी दर्द जिया,
उसे "नाटक" सा बता दिया।

'अंजुम'

*****

भीड़ में था, पर गिनती से बाहर,
हर दिन बस एक इंतज़ार था।
कि कोई देखे दिल के पीछे,
पर नज़रअंदाज़ ही उपहार था।

और जब मैं चला गया चुपचाप,
तब शोर हुआ, तब नाम हुआ।
जो मुँह मोड़ते थे जीते जी,
वो आँखें नम, अब आम हुआ।

कहते हैं अब मैं बेमिसाल था,
कहाँ थे जब टूट रहा था 'अंजुम'?

*****

सिकुड़ जाती है दुनिया इक माँ के चले जाने से
हर नाज उठाती थी वो अब दिल भरा खाने से
हँसी किसे कहते हैं तरस गया मुस्काने से
लब सिल गए हैं जैसे ज़ुबाँ बंद है जमाने से
गाली भी दुआ होती थी रुकते न थे हम सताने से
रूठ जाती थी झूठ मूठ चूमती गले लग जाने से
वजह ढूँढता हूँ जीने की 'अंजुम ' खोया टूट जाने से

*****

हर सुबह तौबा से आग़ाज़ होता है,
हर शाम अश्कों में इक राज़ होता है।

दिल की गलियों में सन्नाटे बसते हैं,
मुस्कान लब पर तो अंदाज़ होता है।

सपनों का मौसम भी रूठा-सा लगता है,
हर ख्वाब ज़ख़्मों का हमसाज़ होता है।

तन्हाई पलकों पे बैठी है चुपचाप,
हर साँस में उसका ही आवाज़ होता है।

गुज़रते लम्हों की दस्तक समझते नहीं,
हर पल तो जैसे इक साज़ होता है।
'अंजुम '

*****

^घुटन^

ये कोई क्षणिक भावना नहीं,
ये तो सालों का जमा हुआ बोझ है,
अनकहे सवालों का बोझ,
अनसुनी पुकारों का बोझ,
और वो नकाब जो दुनिया ने नहीं,
मैंने खुद पहन रखा है।
अंत —
शायद मुक्ति नहीं,
बस एक थकावट भरी स्वीकृति है,
कि अब और नहीं,
अब ख़ामोशी ही अंतिम उत्तर है।
'अंजुम '

*****

^मेरा वजूद^

मैं कौन हूँ, क्या मेरी पहचान है,
इस भीड़ में गुम, कहाँ मेरा मकाम है।
कभी लगता है, मैं बस एक ख़्वाब हूँ,
कभी लगे, ये हस्ती मेरी इल्ज़ाम है।
हर शक्ल में खुद को ढूँढता फिरता हूँ,
आइना भी कहे, ये कैसा अंजाम है।
रूह मेरी पुकारे किसी और आसमाँ को,
जिस्म ये दुनिया के रंग में ग़ुलाम है।
ख़ामोशियाँ मेरी, चीख़ें बे-आवाज़ हैं,
लब सिले हैं, ये कैसा पैगाम है।
गर खोज में निकला हूँ मैं खुद की,
हर मोड़ पर मिलता नया एक नाम है।
क्या यही मेरा वजूद है, क्या यही हक़ीक़त?
ये सफ़र अभी भी जारी, ये कैसा इंतज़ाम है।

'अंजुम '

*****

तेरी लत ऐसी लगी टूटन लगा हूँ मैँ
लगता है ज़िन्दगी से छूटन लगा हूँ मैं
कभी सीने में इक घुटन सी होती है
एहसास की दस्तक वहां पे रोती है
अल्फाज मचलते हैं दिल में अक्सर
जज़्बात की आग अश्कों तले रोती है
यूँ तो फलक पर है सितारों का हुजूम
'अंजुम ' की लकीर में तन्हाई होती है

*****

उस इज्ज़त अफजाई का क्या, जिस का कद्र दाँ कोई न हो
नाहक ही जीना रहा उसका, जिस का सायबाँ कोई न हो
ज़माने भर में तलाश किया, शायद तेरा निशाँ कोई न हो
मिट ही जाता है वजूद उसकाह जिस का मेहरबाँ कोई न हो
तेरे जहान में खाकसार रहे या रब, ऐसा रायगाँ कोई न हो
चन्द अल्फाज में आतिश भर दे, बस जज़्बात ए बयाँ कोई न हो
रफ्ता रफ्ता फासले बना लूँ, वक्त ए रुख़सत एहसाँ कोई न हो
गुल ओ' शजर की बर्बादी तय है, जिस का बागबाँ कोई न हो
दौलत औ' इज्ज़त लुट जाती है, जिस का पासबाँ कोई न हो
तन्हा गर्दिश में भटका 'अंजुम ', जिस का आसमाँ कोई न हो

*****

अभी इम्तिहान और भी

हैं

न रुक मंज़िलों के निशान और भी

हैं

तेरा निगेहबां कोई नहीं तो क्या पासबॉं और भी

हैं

तेरे अफसानों पर ज़माना हंसे भी तो क्या दास्तान और भी

हैं

किसी ने दगा किया भी तो क्या मेहरबाँ और भी

हैं

ये फ़लक आख़िरी नहीं सितारों से आगे जहॉं और भी

हैं

किसी ने दामन को चीर दिया तो क्या तेरे गिरेबॉं और भी हैं

न डर किसी हैवान से पाला पड़ा तो क्या इंसां और भी हैं

ये आकाश गंगा आख़िरी नहीं कहकशां और भी हैं 'अंजुम'
और ऊपर जा फलक से इस से आगे आसमां और भी
हैं
क्योंकर डरता है इन अंधेरों से आगे चरागां और भी
है
अब दौरे ख़िज़ां हैं तो क्या दौरे बहारां और भी
हैं
यह चाहे तुझ से ख़फ़ा ही सही रब ए ज़मां और भी
हैं

*****

तेरी रूह को छूने वाली रुबाई लिखूं
हो सके तो हाले दिल की बात कहूँ
तेरी तस्वीर देख कर मुस्कुराता रहूँ
तेरे तस्सवुर से दिल के जज्बात कहूँ
मगर यह हो नहीं सकता हकीकत है
कि हम तन्हाई में अक्सर पास बैठें
हाथों में हाथ लिए कोई बात कहूँ
वाकिफ़ हैं दोनों हकीकत से फिर भी
चाहत है कि तुम्हें अपने हालात कहूँ

*****

चल जिन्दगी फिर से बात करते हैं
जो हो सके तो मुलाकात करते हैं
कुछ शिकवे तुम्हें भी तो होंगे न
इक दूजे की दूर शिकायात करते हैं
कब से रूठ कर दूर जा बैठी हो
पहले से बेहतर हालात करते हैं
याद है दोनों में बेइन्तहा मुहब्बत थी
सांझे अपने अपने जज़्बात करते हैं
अल्फाज़ में न उलझे ताल्लुक अपने
ऐसे ही कुछ एहतियात करते हैं
चल जिन्दगी फिर से बात करते हैं
जो हो सके तो मुलाकात करते हैं

*****

छोटे छोटे ख़्वाब थे मेरे
छोटी सी इक दुनिया
ढेर खिलौने लेके खेलती
छोटी सी इक मुनिया
कभी रूठती कभी मानती
मासूम सी कुछ न जानती
झूठ मूठ का जब मैं रोता
और वो रुऑंसी हो जाती
ऊषा की लाली सी वो
दोपहर की धूप सी खिलती
स्कूल बैग जब लेकर चलता
पीछे चलती वो थक जाती
साथ बैग के गोद में लेता
जन्नत की ख़ुशी मैं पा कर
कुछ पल सुकून से जी लेता
'अंजुम '

*****

कहीं मंजिल नहीं मिलती, कहीं रस्ता नहीं मिलता।
यह देख कर मुझको, सभी आवारा कहते हैं।
सभी का हाथ थामा था, सभी के काम आया था।
इतना होने पर भी सब, मुझे नकारा कहते हैं।
किसी पर हक नहीं मेरा, कोई मेरा नहीं अब है।
सबका वक्त होता है, मगर मैं भूल जाता हूँ
कि खुदगर्ज जमाने में, बना अपना कोई कब है
फलक से टूट कर गिरता है, जब कहीं कोई 'अंजुम'

*****

किसी के अश्क नहीं बहते, पर मन्नत मांगते सब है
है प्यासी आत्मा मेरी किसी आबे मुहब्बत की
तुम अपनी आँख के आँसू मेरी पलकों में दे डालो
इसी प्यार की खातिर जिबह खुद को ही कर डाला
तुम मुझ पर आशनाँ होकर मेरी हालत बदल डालो,
चमकता था फलक पर भी कभी दिन रात मैं 'अंजुम '
तेरी तकदीर में लिख कर उसी में फिर चमक डालो

*****

इक आज़ाद परिन्दा हूँ
मुझे पिन्जरे में मत डालो
खुला है आसमाँ मेरा
मुझे तुम घर में मत पालो
जरा मैं भी तो देखूँ रे
फलक तेरी बुलंदी को
मैं बादल से भी खेलूँगा
किरण से भी रवि तेरी
इक तू ही तो है मेरा
अगर ऐ आसमाँ समझे
तेरी गोदी में खेलूँगा
कभी अठखेलियाँ करता
मगर ऐ आसमाँ मुझको
बाँहों में जकड़ डालो
ये आकाश ही मेरा है
अपने घर में मत पालो
मैं खुले आसमान की
ऊँचाईयों को छू तो लूँ

*****

किनारा कर लिया तुम ने, किनारा पा लिया तुम ने
मुझे लहरों से लड़ने का, इशारा कर दिया तुम ने
ज़माने भर को जीता था, सिकंदर बन रहा था मैं
ज़रा सी चाल से 'अंजुम ',लाचारा कर दिया तुम ने
भँवर में फस गई कश्ती, साहिल पा लिया तुम ने
मुझे बेआसरा कर के, सहारा पा लिया तुम ने

*****

कोई शिकवा नहीं तुम से, शिकायत भी नहीं कोई
तेरी नज़रों में बेहतर था, नज़ारा कर लिया तुम ने
मेरी गुरबत पे हंसते थे, सदा ख़ामोश रहता था
दिल में चुभ गया नश्तर , नाकारा कह दिया तुम ने
यही वो कहकशाँ मेरा , वही था आसमान मेरा
था चाहा टूट कर 'अंजुम ', फलक पर चाँद जो निकला
न पहले पास थे मेरे, अब भी दूर हो मुझ से
मैं तो दिल से बेबस और , तुम मजबूर हो मुझ से

*****

&ਕੁੱਤੇ ਝਾਕ&

ਦਿਨ ਚੜ੍ਹਿਆ ਸੂਰਜ ਉੱਗਿਆ
ਕੁਝ ਨਵਾਂ ਸੁਨੇਹਾ ਵੀ ਆਊਗਾ
ਕੁੱਤੇ ਝਾਕ ਹੀ ਤਾਂ ਹੈ
ਕੰਨ ਬੂਹੇ ਵੱਲ ਨਜ਼ਰ ਖਾਣ ਵੱਲ
ਨਾ ਖੜਾਕ ਹੋਇਆ ਨਾ ਖਾਣ ਹੀ
ਕੁੱਤੇ ਝਾਕ ਹੀ ਤਾਂ ਹੈ
ਸੰਧਿਆ ਹੋਈ ਚੁੱਪ ਵੱਟ ਕੇ ਨਿਕਲੀ
ਉਦਾਸ ਰੰਗ ਚੜ੍ਹਾ ਕੇ ਚਲੀ ਵੀ ਗਈ
ਕੁੱਤੇ ਝਾਕ ਹੀ ਤਾਂ ਹੈ
ਟੁੱਟੇ ਹੋਏ ਦਿਲ ਨੇ ਦੋ ਪੈੱਗ ਵੀ ਲਾਏ
ਸ਼ਾਇਦ ਕੁਝ ਚੈਨ ਮਿਲੇ ਨੀਂਦ ਆਏ
ਕੁੱਤੇ ਝਾਕ ਹੀ ਤਾਂ ਹੈ
ਖਿੱਚ ਧੂਹ ਕੇ ਬਿਸਤਰ ਫੜਿਆ
ਨਜ਼ਰ ਫੋਨ 'ਤੇ ਸ਼ਾਇਦ ਵੱਜ ਜਾਏ
ਕੁੱਤੇ ਝਾਕ ਹੀ ਤਾਂ ਹੈ
'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਜੀਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਲੈਕੇ
ਡਾਰੋਂ ਵਿਛੜੀ ਕੂੰਜ ਓ ਰੱਬਾ
ਖੂਬ ਉਡਾਰੀ ਮਾਰ ਵੇਖੀਆਂ
ਅੰਬਰ ਲਿਆ ਹੂੰਝ ਓ ਰੱਬਾ
ਸ਼ਾਮ ਹੋਈ ਕੱਲੀ ਰਹਿ ਗਈ
ਡਰ ਨਾਲ ਕੰਬਾਂ ਵਾਜਾਂ ਮਾਰਾਂ
ਕਿਸੇ ਨਾ ਸੁਣੀ ਗੂੰਜ ਓ ਰੱਬਾ
ਕਿੱਧਰ ਜਾਵਾਂ ਜਾਣ ਬਚਾਵਾਂ
ਨਹੀਂ ਦਿਸੇ ਕੋਈ ਖੂੰਡ ਓ ਰੱਬਾ

*****

ਪਾਟੀ ਜੀਨ ਤੇ ਨੰਗੇ ਮੋਢੇ
ਕਿਹੜੀ ਸੋਚ ਦੇ ਮਾਲਿਕ ਨੇ
ਸ਼ਰਮ ਡੁੱਬ ਗਈ ਗੋਡੇ ਗੋਡੇ
ਅੱਜ ਕੀ ਬਣ ਗਏ ਹਾਲਤ ਨੇ
ਸਿਰ ਦੀ ਸ਼ਾਨ ਦੁਪੱਟਾ ਸੀ ਉਹ
ਗਲੋਂ ਉੱਡਦਾ ਜਾਂਦਾ ਏ
ਹੌਲੀ ਹੌਲੀ ਸਾਰੇ ਤਨ ਤੋਂ
ਕਪੱੜਾ ਘਟਦਾ ਜਾਂਦਾ ਏ
ਇਤਿਹਾਸ ਖੁਦ ਨੂੰ ਦੁਹਰਾਂਦਾ
ਮਾਨਵ ਆਦਮ ਯੁੱਗ ਵਲ ਜਾਂਦਾ ਏ
ਜੰਗਲੀ ਹੋਇਆ ਚਰਿੱਤਰ ਸਾਡਾ
ਮਨੁੱਖ ਹੀ ਮਨੁੱਖ ਨੂੰ ਖਾਂਦਾ ਏ

*****

ਬਲਦਾਂ ਦੀਆਂ ਜੋੜੀਆਂ

ਗਲਾਂ ਵਿੱਚ ਟੱਲੀਆਂ
ਟਣ ਟਣ ਕਰਦੀਆਂ
ਖੇਤਾਂ ਨੂੰ ਚੱਲੀਆਂ
ਗਾਦੀ ਉੱਤੇ ਬੈਠ ਕੇ
ਜੱਟ ਢੋਲੇ ਦੀਆਂ ਗਾਉਂਦਾ ਸੀ
ਫਸਲ ਵੇਚ ਕੇ ਦਮਾਮੇ ਵਜਾਉਂਦਾ ਸੀ
ਉਹ ਵੀ ਇੱਕ ਦੌਰ ਸੀ
ਮਿਹਨਤ ਦਾ ਜੋਰ ਸੀ
ਜੀਵਨ ਢੰਗ ਸਾਦਾ ਸੀ
ਪੂਰਾ ਕਰਦੇ ਸਭ ਵਾਦਾ ਸੀ
ਜੁਬਾਨ ਦੇ ਪੱਕੇ ਸੀ
ਚਲਦੇ ਟਾਂਗੇ ਯੱਕੇ ਸੀ
ਮੀਲਾਂ ਮੀਲ ਚਲਦੇ ਸੀ
ਸਵਾਰੀ ਤੋਂ ਟਲਦੇ ਸੀ
ਇਕੋ ਚੁੱਲੇ ਸੱਤ ਟੱਬਰ ਪਲਦੇ ਸੀ
ਵੱਡਿਆਂ ਦੇ ਹੁਕਮ ਚੱਲਦੇ ਸੀ
ਨਾ ਫਰਮਾਨੀ ਦਾ ਸਵਾਲ ਹੀ ਨਹੀਂ ਸੀ
ਅੱਡ ਵਾਹੀ ਦਾ ਤਾਂ ਖਿਆਲ ਨਹੀਂ ਸੀ
ਉਹ ਜਮਾਨਾ ਯਾਦ ਆ ਗਿਆ
ਲਹੂ ਦੇ ਹੰਝੂ 'ਅੰਜੁਮ' ਰੁਆ ਗਿਆ

*****

ਸੱਭ ਕੁੱਝ ਰੁਲ ਗਿਆ ਮੇਰਾ,
ਜਿਵੇਂ ਰਾਹ ਵਿੱਚ ਛੱਡਿਆ ਸਮਾਂ ਪੁਰਾਣਾ ਹੋ ਜਾਵੇ।
ਹੱਥਾਂ ਦੀ ਲਕੀਰਾਂ ਨਾਲ ਕਹਾਣੀਆਂ ਤਾਂ ਬਹੁਤ ਨੇ,
ਪਰ ਸੁਣਨ ਵਾਲਾ ਕੋਈ ਨਾ ਰਹੇ, ਤਾਂ ਮਨ ਵੀ ਰੋ ਜਾਵੇ।

ਜੋ ਕੰਧਾਂ ਕਦੇ ਹੱਸਦੀਆਂ ਸਨ ਮੇਰੇ ਨਾਲ,
ਹੁਣ ਉਹਨਾਂ 'ਤੇ ਠੰਡੀ ਖਾਮੋਸ਼ੀ ਜਮ ਗਈ ਏ।
ਪੁੱਛਣ ਵਾਲੇ ਚਿਹਰੇ ਵਿਹੜ੍ਹੇ ਵਿੱਚ ਨੇ ਤਾਂ ਕਈ,
ਪਰ ਅਸਲ ਹਾਲਤ, ਅਸਲ ਦਰਦ—
ਕੋਈ ਅੱਖ ਨਾ ਪਛਾਣ ਗਈ ਏ।

ਕਦਮ ਕਦਮ ਪਰਛਾਵੇਂ ਵਾਂਗ ਲੁੱਡਦੇ ਨੇ,
ਪਰ ਮੰਜ਼ਿਲਾਂ ਹੁਣ ਦੂਰੋਂ ਹੀ ਹੱਥ ਹਿਲਾਉਂਦੀਆਂ।
ਜਵਾਨੀ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਜੇਬਾਂ ਵਿੱਚੋਂ ਰੇਤ ਵਾਂਗ
ਹੌਲੇ-ਹੌਲੇ ਸਲਿਪ ਹੋਕੇ ਕਿੱਥੇ ਗਾਇਬ ਹੋ ਜਾਂਦੀਆਂ।
'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਨਾ ਉਹ ਪੰਡਿਤ ਨਾ ਉਹ ਕਥਾਵਾਂ
ਤੈਨੂੰ ਰੱਬ ਜੀ ਕਿੱਦਾਂ ਪਾਵਾਂ
ਧਰਮ ਤਾਂ ਹੁਣ ਬਣਿਆ ਵਪਾਰ
ਪੰਜ ਰੁਪਈਆ ਮੱਥਾ ਟੇਕਾਂ
ਬਦਲੇ ਵਿੱਚ ਪੰਜ ਲੱਖ ਚਾਹਵਾਂ
ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਨੇ ਸੌਦਾ ਕਰਦੇ
ਰੱਬਾ ਮੇਰਾ ਇਹ ਕੰਮ ਕਰ ਦੇ
ਫਿਰ ਸੋਨੇ ਦਾ ਛਤਰ ਚੜ੍ਹਾਵਾਂ
ਨਾ ਕੋਈ ਰਿਸ਼ਤੇ ਨਾ ਕੋਈ ਯਾਰੀ
ਹਰ ਕੋਈ ਹੁਣ ਬਣਿਆ ਵਪਾਰੀ
ਇਹਦੇ ਤੋਂ ਹੁਣ ਮੈਂ ਕੀ ਲੈਣਾ
ਜੇ ਇਹਨੇ ਕੋਈ ਕੰਮ ਨਹੀਂ ਆਉਣਾ
ਨਾਨਕ ਜੀ ਕੀ ਗੱਲ ਸੁਣਾਵਾਂ
ਭੁੱਲ ਗਏ ਸਭ ਤੇਰੀਆਂ ਰਾਹਵਾਂ
ਨਾ ਤਾਂ ਹੁਣ ਇਹ ਕਿਰਤ ਕਮਾਂਦੇ
ਨਾ ਹੀ ਹੁਣ ਇਹ ਵੰਡ ਕੇ ਖਾਂਦੇ
ਨਾਮ ਜਪਣ ਤੋਂ ਦੂਰ ਨੇ ਜਾਂਦੇ
ਹਰ ਬਾਬਾ ਹੈ ਰੱਬ ਵਿਖਾਉਂਦਾ
ਭਵ ਸਾਗਰ ਤੋਂ ਪਾਰ ਲੰਘਾਉਂਦਾ
ਆਪ ਕਚਹਿਰੀ ਧੱਕੇ ਖਾਵਣ
ਲੋਕੀ ਮੂਰਖ ਬਣਦੇ ਜਾਵਣ
ਜੇਲ੍ਹਾਂ ਦੇ ਵਿੱਚ ਡੇਰੇ ਲਾਵਣ
ਸ਼ਕਤੀ ਹੈ ਤਾਂ ਉਥੇ ਵਿਖਾਵਣ
ਗ਼ਾਇਬ ਹੋ ਕੇ ਬਾਹਰ ਆਵਣ

'ਅੰਜੁਮ'

*****

ਦੂਰੀ ਰੱਖ ਬਣਾ ਕੇ ਬੰਦਿਆ
ਖੁਦਗਰਜੀ ਮਿਤੱਰਾਂ ਯਾਰਾਂ ਤੋਂ
ਜਿਉਂ ਪਾਸੇ ਪਾਸੇ ਨਿਕਲ ਜਾਣੈ
ਬਿਜਲੀ ਦੀ ਨੰਗੀਆਂ ਤਾਰਾਂ ਤੋਂ
ਇੱਛਾ ਧਾਰੀ ਨਾਗ ਵੀ ਸੰਗਦੈ
ਇਹੋ ਜਿਹੇ ਗੰਦੇ ਅੱਯਾਰਾਂ ਤੋਂ
ਲਾ ਬਹਾਨਾ ਮੰਗਣ ਉਧਾਰੀ
ਅੱਖਾਂ ਕੱਢਦੇ ਦੇਣ ਦੀ ਵਾਰੀ
ਇਕ ਬੇਨਤੀ ਤੈਨੂੰ ਵੀ ਰੱਬਾ
ਰੱਖੀਂ ਬਚਾ ਕੇ 'ਅੰਜੁਮ' ਨੂੰ ਮੱਕਾਰਾਂ ਤੋਂ

*****

ਸੱਚ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਲੁਕ ਲੁਕ ਬਹਿੰਦਾ
ਝੂਠ ਵਿਕੇਂਦਾ ਬਜਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ
ਨਕਲੀ ਖ਼ੂਸ਼ਬੂ ਘਰ ਘਰ ਉੱਡੇ
ਲੁਕਦੀ ਫਿਰੇ ਬਹਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ
ਕੋਲੇ ਕੋਈ ਮਤਲਬ ਨੂੰ ਬਹਿੰਦਾ
ਰਿਸ਼ਤੇ ਬਣੇ ਵਪਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ
ਚੁੰਨੀ ਵੱਟ ਭੈਣਾਂ ਲੱਭਣ ਨਹੀਂ
ਨਹੀਂ ਪੱਗ ਵੱਟ ਯਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ

*****

ਕੋਈ ਖਿੱਚ ਨਹੀਂ ਫਿਰ ਕੋਈ ਤਾਂਘ ਨਹੀਂ
ਫਾਸਲੇ ਘਟਣ ਪੁੱਟੀ ਕੋਈ ਪੁਲਾਂਘ ਨਹੀਂ
ਗਲਤ ਫਹਿਮੀ ਤਾਂ ਦੂਰੀਆਂ ਵਧਾ ਦਿੰਦੀ
ਨਹੁੰ ਵਢੱਣ ਤੋਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉਂਗਲ ਜਾਂਚ ਲਈਂ
ਇੱਕ ਦਰਜ ਤੋਂ ਬਣਿਆ ਪਾੜ ਓ ਯਾਰਾ
ਲਗਦੈ ਰਹੀ ਹੁਣ ਦਿਲਾਂ ਦੀ ਸਾਂਝ ਨਹੀਂ
ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ ਪਿਆਰ ਦੀ ਕੋਈ ਘਾਟ ਨਹੀਂ
ਪਰਖ ਲਈਂ ਸਾਂਚ ਨੂੰ ਕੋਈ ਆਂਚ ਨਹੀਂ
ਵੈਸੇ ਵੀ ਇੱਕ ਰੁੱਤੇ ਆਪਣੇ ਆਪ ਸੁੱਕ ਜਾਣੈ
ਤੇਲ ਪਾਕੇ ਜੜ੍ਹਾਂ ਨੂੰ ਕਰੀਂ ਧਰਤੀ ਬਾਂਝ ਨਹੀਂ
'ਅੰਜੁਮ '

*****

&ਖਾਲੀ ਵਿਹੜਾ&

ਏਥੇ ਫੇਰ ਨਾ ਮੁੜ ਕੇ ਆਵਣ
ਇਕ ਵਾਰ ਜੇ ਤੁਰ ਜਾਵਣ ਮਾਵਾਂ
ਭੁੱਖ ਲਗੱਣ ਤੇ ਕੋਲ ਬਿਠਾ ਕੇ
ਕਦੇ ਚੁੰਨੀ ਵਿੱਚ ਲੁਕਾ ਕੇ
ਬੁਰਕੀ ਮੂੰਹ ਵਿੱਚ ਪਾਉਂਦੀ ਸੀ
ਭੁੱਖ ਲਗੇ ਤਾਂ ਦਿਲ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ
ਓਸ ਪਿਆਰ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਭੁਲਾਵਾਂ
ਲਾ ਸੀਨੇ ਨਾਲ ਗੋਦੀ ਦੇ ਵਿੱਚ
ਜਦੋਂ ਤੂੰ ਲੋਰੀ ਗਾਉਂਦੀ ਸੈਂ
ਨਿਡੱਰ ਤੇ ਬੇਫਿਕਰਾ ਹੋਕੇ
ਬੜੇ ਸਕੂਨ ਨਾਲ ਸੌਂ ਜਾਂਦਾ ਮੈਂ
ਹੁਣ ਤਨ ਸੌਂਵੇ ਤੇ ਮਨ ਪਿਆ ਜਾਗੇ
ਅੰਜੁਮ ' ਇਸ ਨੂੰ ਕਿਵੇਂ ਸੁਆਵਾਂ

*****

ਗੁੰਝਲਾਂ ਕਿੰਨੀਆਂ ਪਾ ਬੈਠਾ ਵਾਂ
ਨਿਕਲਣ ਲਈ ਢਿੱਲਾਂ ਈ ਦੇ ਦੇ
ਦੁੱਖ ਸੁੱਖ ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਫੋਲ ਲਵਾਂਗਾ
ਰੱਬਾ ਐਸੀ ਕੋਈ ਥਾਂ ਈ ਦੇ ਦੇ
ਜੇਕਰ ਕੁੱਝ ਭੁੱਲ ਵੀ ਜਾਵਣ ਮੈਨੂੰ
ਰੱਬਾ ਯਾਦਾਂ ਦੀਆਂ ਛੱਲਾਂ ਈ ਦੇ ਦੇ
ਕੁਝ ਖੱਟੀਆਂ ਤੇ ਕੁਝ ਮਿੱਠੀਆਂ
ਪਿਟਾਰੀ ਵਿੱਚੋਂ ਗੱਲਾਂ ਈ ਦੇ ਦੇ
ਜੀਵਣ ਨੂੰ ਹੁਣ ਜੀ ਨਹੀਂ ਕਰਦਾ
ਮਰਣ ਵਾਲਾ ਕੋਈ ਗਰਾਂ ਈ ਦੇ ਦੇ

*****

ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਇੱਕ ਸੁੰਦਰ ਬੁੱਤ ਬਣਾਵਾਂ
ਉਸ ਵਿਚ ਥੋੜਾ ਪਿਆਰ ਜਗਾਵਾਂ
ਜੋ ਕੁੱਝ ਉਹ ਮੰਗੇ ਸਭ ਲੈਕੇ ਆਵਾਂ
ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਇੱਕ ਸੁੰਦਰ ਬੁੱਤ ਬਣਾਵਾਂ,
ਉਸ ਵਿੱਚ ਸਾਹਾਂ ਦਾ ਨਰਮ ਸੁਪਨਾ ਪਾਵਾਂ,
ਥੋੜਾ ਪਿਆਰ ਜਗਾ ਕੇ ਉਸ ਦੇ ਚਿਹਰੇ 'ਤੇ,
ਇਕ ਨਵੀਂ ਰੌਸ਼ਨੀ ਹਰ ਵੇਲੇ ਬਰਸਾਵਾਂ।
ਜੋ ਕੁੱਝ ਮੰਗੇ, ਮੈਂ ਦੌੜ ਕੇ ਲੈ ਆਵਾਂ,
ਉਸ ਦੀ ਹਰ ਖ਼ਾਹਸ਼ ਨੂੰ ਅੱਖਾਂ 'ਚ ਸਜਾਵਾਂ,
ਮੰਜਿਲਾਂ ਉਸ ਦੇ ਕਦਮਾਂ 'ਚ ਰੱਖ ਦਿਆਂ,
ਰਾਹਾਂ ਨੂੰ ਵੀ ਉਸ ਦੇ ਹੱਕ 'ਚ ਝੁਕਾਵਾਂ।
ਮਿੱਟੀ ਦਾ ਬੁੱਤ ਪਰ ਰੂਹਾਂ ਵਾਲਾ,
ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਦੇ ਦਰਵਾਜ਼ੇ ਖੋਲ੍ਹਣ ਵਾਲਾ,
ਪਿਆਰ ਦੀ ਖੁਸ਼ਬੂ ਨਾਲ ਜੀਵਨ ਰੰਗੇ,
ਇਕ ਖ਼ਾਬ ਨਹੀਂ — ਹਕੀਕਤ ਬਣ ਜਾਣ ਵਾਲਾ।
*****

ਇਹੀ ਦਸਤੂਰ ਜਮਾਨੇ ਦਾ,
ਕੋਈ ਨ੍ਹੀ ਕਸੂਰ ਜਮਾਨੇ ਦਾ।
ਜਿਉਂਦਾ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਅਣਡਿੱਠਾ ਸੀ,
ਸਾਹਾਂ ਦੀ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਲੋੜ ਨ੍ਹੀ।
ਸਾਹ ਮੁੱਕੇ ਤਾਂ ਹਰ ਇਕ ਕਹਿੰਦਾ,
"ਬੜਾ ਅਜੀਜ਼ ਸੀ" — ਝੂਠ ਪੁਰਾਣੇ ਦਾ।
ਦਰਦ ਸੁਣਾਇਆ ਤਾਂ ਸੌਦੇ ਬਣੇ,
ਹੰਝੂ ਵੇਖ ਕੇ ਵੀ ਮੁੜ ਗਏ।
ਚੁੱਪ ਰਿਹਾ ਤਾਂ ਕਮਜ਼ੋਰ ਕਿਹਾ,
ਬੋਲਿਆ ਤਾਂ ਦੋਸ਼ ਨਿਭਾਣੇ ਦਾ।
ਕੰਧਾਂ ਨਾਲ ਗੱਲਾਂ ਕਰਦਾ ਰਿਹਾ,
ਲੋਕਾਂ ਕੋਲ ਵੇਲਾ ਨ੍ਹੀ ਸੀ।
ਮਿੱਟੀ ਹੋਇਆ ਤਾਂ ਸਭ ਨੂੰ ਫੁਰਸਤ,
ਮਾਤਮ ਕਰਨ, ਸਿਰ ਹਿਲਾਣੇ ਦਾ।
ਸੱਚ ਜਿਉਂਦਾ ਰਹੇ ਤਾਂ ਚੁਭਦਾ ਹੈ,
ਲਾਸ਼ ਬਣੇ ਤਾਂ ਪੂਜਾ ਮਿਲਦੀ।
ਇਨਸਾਨ ਦੀ ਕੀਮਤ ਲੱਗਦੀ ਹੈ,
ਸਿਰਫ਼ ਮਰ ਕੇ—ਇਹ ਰਿਵਾਜ ਜਮਾਨੇ ਦਾ।
ਇਹੀ ਦਸਤੂਰ ਜਮਾਨੇ ਦਾ,
ਕੋਈ ਨ੍ਹੀ ਕਸੂਰ ਜਮਾਨੇ ਦਾ—
ਜਿਉਂਦੇ ਜੀ ਕੋਈ ਆਪਣਾ ਨ੍ਹੀ,
ਮੁਰਦੇ ਨੂੰ ਹਰ ਕੋਈ ਹਲੂਣਦਾ।

*****

ਕੀ ਹੈ ਬੰਦਿਆ ਬੁੱਕਤ ਤੇਰੀ ਇੱਕੋ ਇੱਕ ਸੁਆਹ ਦੀ ਢੇਰੀ
ਕਿਸ ਗੱਲ ਦਾ ਹੰਕਾਰ ਕਰੇਨੈ ਸਿੱਧੀ ਧੌਣ ਕਿਸ ਨੂੰ ਵਿਖੇਣੈ
ਸਾਰੀ ਉਮਰ ਮੌਜ ਸੀ ਲੁੱਟੀ ਬਣ ਗਿਆ ਤੂੰ ਸੁਆਹ ਦੀ ਮੁੱਠੀ
ਉੱਚੇ ਓੱਚੇ ਮਹਿਲ ਮੁਨਾਰੇ ਸੋਹਣੀ ਕੋਠੀ ਵੱਡੇ ਚੁਬਾਰੇ
ਰਹਿ ਜਾਣੇ ਇੱਥੇ ਹੀ ਸਾਰੇ, 'ਕੱਲੇ ਜਾਣਾ ਮਾਲਿਕ ਦੁਆਰੇ
ਕੀ ਹੈ ਬੰਦਿਆ ਬੁੱਕਤ ਤੇਰੀ ਇੱਕੋ ਇੱਕ ਸੁਆਹ ਦੀ ਢੇਰੀ।

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਬਾਹਰੋਂ ਤਾਂ ਤੇਰਾ ਲਿਸ਼ਕਣ ਪੁਸ਼ਕਣ ਅੰਦਰ ਮੈਲ ਜਮਾਈ
ਇਤਰ ਫੁਲੇਲਾਂ ਮਹਿਕਾਂ ਮਾਰਨ ਤੇ ਖੁਸ਼ਬੂ 'ਚ ਨ੍ਹਾ ਕੇ ਆਈ
ਇਸ਼ਕ ਮਜਾਜੀ ਇਸ਼ਕ ਹਕੀਕੀ ਦੋਹਾਂ 'ਚ ਫਰਕ ਨਾ ਕਾਈ
ਇਕ ਹੁਸਨ ਦਾ ਰੂਪ ਸੁਆਰੇ ਦੂਜਾ ਰੂਹ ਦੀ ਰੁਸ਼ਨਾਈ
ਜੱਗ ਦੀ ਮੁਹੱਬਤ ਸੁਫਨੇ ਜਿਹੀ ਜਿਸ ਵਿੱਚ ਉਮਰ ਗੁਆਈ
ਛੱਡ ਓ 'ਅੰਜੁਮ' ਰੱਬ ਮਨਾ ਲੈ ਉਹੀਓ ਤੇਰਾ ਸਹਾਈ

*****

ਬਸ ਊਂਈਂ

&ਕੀ ਆਖਾਂ&

ਕੀ ਐ ਸਾਡਾ ਹੱਕ ਵੇ ਯਾਰਾ
ਤੂੰ ਬਿਗਾਨੀ ਅਮਾਨਤ ਐਂ
ਪਿਆਰ ਅਸਾਡਾ ਤੇਰੇ ਕੋਲ
ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀ ਜਮਾਨਤ ਐ
ਮੈਨੂੰ ਮਿਲਣ ਦੀ ਹਸਰਤ ਵੀ
ਤੈਰਾ ਇਕ ਅਹਿਸਾਨ ਐ
ਕਿਸੇ ਦੀ ਉਡੀਕ ਵਿੱਚ ਤਾਂ
ਇਹ ਦਿਲ ਵੀਰਾਨ ਐ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

*ਬਸ ਊਂਈ *

&ਕੀ ਆਖਾਂ&

^ਕਦੇ^

ਸੱਖਣੇ ਭਾਂਡੇ ਕਦੇ ਕਿਸੇ ਨੂੰ ਮੋੜੀਏ ਨਾ
ਪਿਆਰ ਭਰਿਆ ਦਿਲ ਤੋੜੀਏ ਨਾ
ਮਤਲਬੀ ਨਾਲ ਰਿਸ਼ਤਾ ਜੋੜੀਏ ਨਾ
ਝੂਠ ਬੋਲ ਕੈ ਗੱਪਾਂ ਰੋੜੀਏ ਨਾ
ਸੱਚ ਦਾ ਪੱਲਾ ਕਦੇ ਛੋੜੀਏ ਨਾ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਭਾਂਅ ਭਾਂਅ ਕਰਦੇ ਨੇ ਸਾਡੇ ਵਿਹੜੇ
ਵਕ਼ਤ ਨੇ ਪਾਏ ਕਿਹੋ ਜਿਹੇ ਨਿਖੇੜੇ
ਸੁਣ ਸਜੱਣਾ ਤੂੰ ਛੱਡ ਗਿਉਂ ਸਾਨੂੰ
ਜਿਉਂ ਧੁੱਪ ਤੇ ਛਾਂ ਦੇ ਝਗੜੇ ਝੇੜੇ
ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਹੀ ਵਜੂਦ ਸੀ ਸਜੱਣਾਂ
ਹੁਣ ਜੱਗ ਤੇ ਮੈਨੂੰ ਜਾਣਨ ਕਿਹੜੇ
ਸਾਹ ਆਵੇ ਸਾਹ ਜਾਵੇ ਹੁਣ ਤਾਂ
ਜਿੰਦ ਨਾ ਦਿੱਸਦੀ ਨੇੜੇ ਤੇੜੇ
ਦਰਦਾਂ ਦਾ ਕੋਈ ਵਾਰਿਸ ਹੈ ਨ੍ਹੀ
ਜੋ ਵਾਜਾਂ ਮਾਰ ਕੇ ਆਪ ਸਹੇੜੇ
ਜਾਂਦੀ ਵਾਰੀ ਗਲ ਲੱਗ ਕੇ ਜਾਂਦੋ
ਹੋ ਜਾਂਦੇ ਕਈ ਜਨਮਾਂ ਦੇ ਨਿਬੇੜੇ
' ਅੰਜੁਮ '

*****

ਦੀਵੇ ਬਾਲ ਉਮੀਦਾਂ ਵਾਲੇ
ਹਰ ਕਾਰਣ ਚਾਨਣ ਜਗਾਇਆ
ਕਿਤੇ ਠੇਡਾ ਖਾ ਨਾ ਜਾਵੇ
ਕੋਈ ਮੇਰੇ ਰੱਬ ਦਾ ਜਾਇਆ
ਅੰਜੁਮ'

*****

ਖੁੱਲ੍ਹ ਕੇ ਜੀਣ ਦੀ ਇੱਛਾ ਲੈਕੇ
ਡਾਰੋਂ ਵਿਛੜੀ ਕੂੰਜ ਓ ਰੱਬਾ
ਖੂਬ ਉਡਾਰੀ ਮਾਰ ਵੇਖੀਆਂ
ਅੰਬਰ ਲਿਆ ਹੂੰਝ ਓ ਰੱਬਾ
ਸ਼ਾਮ ਹੋਈ ਕੱਲੀ ਰਹਿ ਗਈ
ਡਰ ਨਾਲ ਕੰਬਾਂ ਵਾਜਾਂ ਮਾਰਾਂ
ਕਿਸੇ ਨਾ ਸੁਣੀ ਗੂੰਜ ਓ ਰੱਬਾ
ਕਿੱਧਰ ਜਾਵਾਂ ਜਾਣ ਬਚਾਵਾਂ
ਨਹੀਂ ਦਿਸੇ ਕੋਈ ਖੂੰਡ ਓ ਰੱਬਾ
*****

ਡਾਰੋਂ ਵਿਛੜੀ ਕੂੰਜ
ਸੁਰਾਂ ਤੋਂ ਖਾਮੋਸ਼ ਹੋ ਗਈ
ਪਰਾਂ ਵਿੱਚ ਦਰਦ ਦੀ ਟੀਸ ਬਸ ਗਈ
ਅਸਮਾਨ ਤੱਕਦੀ ਰਹੀ
ਜਿਥੇ ਉਸਦਾ ਝੁੰਡ ਗੁਜ਼ਰ ਗਿਆ
ਹਵਾ ਨਾਲੋਂ ਪੁੱਛਦੀ ਰਹੀ
ਕੌਣ ਮੇਰੀ ਪੁਕਾਰ ਸੁਣੇਗਾ
ਝੀਲ ਦੇ ਪਾਣੀ ਵਿੱਚ ਪਰਛਾਵਾਂ ਡੁੱਲਿਆ
ਪਰ ਸਾਥੀ ਕੋਈ ਨਾ ਮਿਲਿਆ
ਵਿਛੋੜੇ ਦਾ ਸੁਰ ਇਕਲਾ ਸੀ
ਦਿਲ ਦੇ ਅੰਦਰ ਅਵਾਜ਼ ਬਣਿਆ ਸੀ
ਡਾਰੋਂ ਵਿਛੜੀ ਕੂੰਜ ਅੱਜ ਵੀ
ਮਿਲਾਪ ਦੇ ਸੁਪਨੇ ਗੁੰਥਦੀ ਰਹੀ।

ਡਾਰੋਂ ਵਿਛੜੀ ਕੂੰਜ
ਇਕੱਲੇਪਨ ਦਾ ਰਾਗ ਗਾਂਦੀ
ਨੀਲੇ ਅਸਮਾਨ ਦੀਆਂ ਗਹਿਰਾਈਆਂ ਵਿੱਚ
ਆਪਣੇ ਪਰਾਂ ਦੀ ਧੁਨ ਸੁਣਦੀ ਰਹੀ।

ਡਾਰ ਦੀ ਸਾਂਝੇਦਾਰੀ ਤੋਂ ਦੂਰ
ਹਰ ਪਲ ਉਸਨੂੰ ਯਾਦ ਆਉਂਦੀ
ਸਾਥੀਆਂ ਦੇ ਸੁਰਾਂ ਦੀ ਗੂੰਜ
ਅੱਜ ਵੀ ਹਿਰਦੇ ਵਿੱਚ ਝੰਕਾਰਦੀ।

ਪ੍ਰਵਾਸ ਦੀਆਂ ਲੰਮੀਆਂ ਰਾਹਾਂ 'ਤੇ
ਉਸਦਾ ਸਫ਼ਰ ਅਧੂਰਾ ਰਹਿ ਗਿਆ
ਡਾਰੋਂ ਵਿਛੜੀ ਕੂੰਜ ਵਾਂਗ
ਜੀਵਨ ਵੀ ਕਈ ਵਾਰ ਤਨਹਾ ਰਹਿ ਗਿਆ।

*****

ਕੋਈ ਤਾਂਘ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਖਿੱਚ ਨਹੀਂ
ਇੱਕ ਅਜੀਬ ਜਿਹੀ ਮਜਬੂਰੀ ਐ
ਦੇਖਣ ਲਈ ਨਾਲੋ ਨਾਲ ਬੈਠੇ ਆਂ
ਪਰ ਦਿਲੋਂ ਇੱਕ ਵੱਖਰੀ ਦੂਰੀ ਐ
ਕੋਈ ਤਾਂਘ ਨਹੀਂ ਕੋਈ ਖਿੱਚ ਨਹੀਂ
ਨਾ ਪਿਆਰ ਵਾਲੀ ਜੁੜੀ ਕੋਈ ਤਾਰ
ਇਸ ਇਕਰਾਰ ਤੇ ਕੋਈ ਹਿੱਚ ਨਹੀਂ
ਕੁੱਝ ਨਾ ਬਚਿਆ ਆਪਣੇ ਵਿਚਕਾਰ

*****

ਮਿਲਣਾ ਤਾਂ ਇੱਕ ਪਲ ਦਾ,ਫਿਰ ਲੰਬਾ ਵਿਛੋੜਾ ਏ
ਹਾੜਾ ਵੇ ਨਾ ਛੱਡ ਜਾਵੀਂ,ਇਹ ਲਫ਼ਜ਼ ਤਾਂ ਕੌੜਾ ਏ
ਇਹ ਪਾੜ ਵੀ ਛੋਟਾ ਨਹੀਂ,ਸਾਗਰ ਜਿੰਨਾ ਚੌੜਾ ਏ
ਮੇਰੀ ਤੜਪ ਨਾ ਸਮਝੀ ਤੂੰ,ਤੇਰਾ ਦਿਲ ਬੜਾ ਸੌੜਾ ਏ
ਕੁਝ ਹੋਰ ਨਾ ਮੰਗਿਆ ਸੀ,ਦੋ ਪਲ ਦਾ ਸਾਥ ਤੇਰਾ
ਕਿਓਂ ਪਾਸਾ ਵੱਟ ਲਿਆ,ਮੈਂ ਭਰਿਆ ਘੁੱਟ ਕੌੜਾ ਏ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਸਾਡੇ ਕੋਲੋਂ ਕਾਹਦਾ ਰੱਖਿਆ ਤੂੰ ਵੱਟ ਵੇ
ਹੁਣ ਮੇਰੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਐ ਬਹੁਤ ਘੱਟ ਵੇ
ਸਾਡੇ ਨਾਲ ਕਦੇ ਖੁੱਲ ਕੇ ਨਾ ਹੱਸਿਆ
ਹਰ ਵੇਲੇ ਰਹਿੰਦਾ ਤੇਰਾ ਮੂੰਹ ਕੱਸਿਆ
ਦਿਲ ਦਾ ਗੁਬਾਰ ਕਦੇ ਨਹੀਂ ਦੱਸਿਆ
ਸ਼ਾਲਾ ਜੀਵੇਂ ਖੁਸ਼ ਰਹੇਂ ਸਦਾ ਵੱਸਿਆ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

*ਬਸ ਊਂਈ *

&ਕੀ ਆਖਾਂ&

^ਵਾਦਾ^

ਅਸੀਂ ਤੋੜ ਨਿਭਾਵਾਂਗੇ 2

ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਜੇ ਦੇਵੇ ਮੋਹਲਤਾਂ

ਕਦੀ ਮਿਲਣ ਵੀ ਆਵਾਂਗੇ

ਤੇਰੀ ਵੀ ਮਜਬੂਰੀ ਏ 2

ਦਿਲਾਂ ਵਿੱਚ ਵਸਦੇ ਆਂ

ਬਸ ਨਜ਼ਰਾਂ ਦੀ ਦੂਰੀ ਏ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਉਦਾਸੀਆਂ ਦੇ ਪਰਛਾਵੇਂ

ਉਦਾਸੀਆਂ ਦੇ ਪਰਛਾਵੇਂ
ਲੰਬੇ ਹੀ ਲੰਬੇ ਹੋਈ ਜਾਂਦੇ,
ਜਿਵੇਂ ਤੂੰ ਚਲਿਆ ਗਿਆ ਸੀ
ਤੇ ਮੇਰਾ ਸਾਇਆ ਵੀ ਰੁੱਸ ਗਿਆ ਸੀ।

ਉਹ ਰਾਤ — ਜਦ ਤੂੰ ਖਾਮੋਸ਼ ਚਲਾ ਗਿਆ,
ਨਾ ਅੱਖ ਮਿਲਾਈ, ਨਾ ਸ਼ਬਦ ਛੱਡਿਆ,
ਉਸ ਵਕਤੋਂ ਲੈ ਕੇ
ਹਰ ਰਾਤ ਨੇ ਮੇਰੇ ਚਿਹਰੇ ਉੱਤੇ
ਤੇਰੇ ਨਾਂ ਦੀ ਚੁੱਪ ਲਿਖ ਦਿੱਤੀ।

ਕਮਰੇ ਦੇ ਇੱਕ ਕੋਨੇ ਵਿੱਚ
ਅਜੇ ਵੀ ਤੇਰੀ ਹੰਸੀ ਦੀ ਗੂੰਜ ਫਸਦੀ,
ਚਾਦਰਾਂ ਉੱਤੇ ਵੱਸਦੀ ਤੇਰੀ ਮਹਿਕ
ਹੁਣ ਵੀ ਉਡੀਕ ਕਰਦੀ ਹੈ
ਕਿ ਕਿਸੇ ਰੋਜ਼ ਤੂੰ ਵਾਪਸ ਆਵੇਂ।

ਮੈਂ ਤੇਰੀਆਂ ਚਿੱਠੀਆਂ ਨਹੀਂ ਸਾਂਭ ਸਕਿਆ,
ਪਰ ਹਰ ਲਫ਼ਜ਼ ਅਜੇ ਵੀ
ਦਿਲ ਦੀਆਂ ਕੰਧਾਂ 'ਤੇ ਉਕਰੇ ਹੋਏ ਨੇ,
ਤੇ ਉਹ ਲਫ਼ਜ਼
ਹਰ ਰੋਜ਼ ਮੇਰੇ ਅੰਦਰ ਪਰਛਾਵੇਂ ਵਾਂਗ ਫੈਲ ਜਾਂਦੇ ਨੇ।

ਤੂੰ ਸੀ, ਤਾਂ ਰੰਗ ਸੀ, ਰੌਸ਼ਨੀ ਸੀ,
ਹੁਣ ਹਰ ਰੰਗ ਭੁਝ ਗਿਆ,

ਤੇ ਮੈਂ —

ਇੱਕ ਅਧੂਰੀ ਤਸਵੀਰ ਵਾਂਗ

ਉਸ ਦਿਨ ਦੀ ਤਾਰੀਖ ਵਿੱਚ ਫਸਿਆ ਹੋਇਆ ਹਾਂ।

ਉਦਾਸੀਆਂ ਦੇ ਇਹ ਪਰਛਾਵੇਂ

ਹੁਣ ਮੇਰੇ ਨਾਲ ਹੀ ਜੀਉਂਦੇ ਨੇ,

ਤੇਰੇ ਨਾਂ ਦੇ ਸਾਥੀ ਹੋ ਕੇ,

ਮੈਨੂੰ ਹਰ ਰੋਜ਼ ਯਾਦ ਦਿਲਾਉਂਦੇ ਨੇ —

ਕਿ ਤੂੰ ਗਿਆ ਤਾਂ ਸੀ,

ਪਰ ਮੈਨੂੰ ਖਾਲੀ ਛੱਡ ਗਿਆ।

*****

&ਟੱਪੇ &

ਪੈਲਾਂ ਮੋਰ ਹੀ ਪਾਂਦੇ ਨੇ 2

ਰਾਹੀਆਂ ਨੂੰ ਡੱਕ ਲਈਏ 2

ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਉਹ ਛੱਡ ਜਾਂਦੇ ਨੇ

ਫੁੱਲਾਂ ਨਾਲ ਕੰਡੇ ਨੇ 2

ਦਿਲ ਨੂੰ ਮੁਹੱਬਤਾਂ ਨੇ 2

ਬਸ ਦਰਦ ਹੀ ਵੰਡੇ ਨੇ

ਪੈਲਾਂ ਮੋਰ ਹੀ ਪਾਂਦੇ ਨੇ 2

ਹੰਝੂਆਂ ਨੂੰ ਡੱਕ ਲਈਏ 2

ਨਹੀਂ ਤਾਂ ਹੜ੍ਹ ਬਣ ਜਾਂਦੇ ਨੇ 2

ਸਾਡੇ ਗਲ ਵਿੱਚ ਲੀਰਾਂ ਨੇ 2

ਦੇਕੇ ਦੁਆਵਾਂ ਤੈਨੂੰ

ਤੁਰ ਜਾਣਾ ਫਕੀਰਾਂ ਨੇ 2

ਅੰਜੁਮ '

*****

*ਬਸ ਊਂਈ *

&ਕੀ ਆਖਾਂ&

^ਜਰੂਰ^

ਨਾ ਕਦਰੇ ਨਾ ਬੇਕਦਰੇ ਫਿਰ ਵੀ ਤਾਂ ਸਾਹ ਚਲਦੇ ਨੇ
ਨਾ ਪਿਆਰੇ ਨਾ ਦੁਤਕਾਰੇ ਫਿਰ ਵੀ ਤਾਂ ਰਾਹ ਚਲਦੇ ਨੇ
ਨਾ ਬੇਆਸਰੇ ਨਾ ਸਹਾਰੇ ਫਿਰ ਵੀ ਤਾਂ ਅਗਾਂਹ ਚਲਦੇ ਨੇ
ਨਾ ਬੇਲੋੜੇ ਨਾ ਚਾਹਵੇ ਕੋਈ ਫਿਰ ਵੀ ਤਾਂ ਬੇਜ਼ੁਬਾਨ ਚਲਦੇ ਨੇ
ਜਿੰਦਗੀ ਤਾਂ ਨਿਕਲ ਰਹੀ ਉਹ ਮਾਲਿਕ ਜਿਵੇਂ ਸਵਾਰੇ
ਧਰਤੀ ਤੇ ਜੰਤੂ ਵੀ ਪਲਦੇ ਨੇ ਉਸ ਰੱਬ ਦੇ ਸਹਾਰੇ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਬਿਆਨ

ਨਾਲ ਹਿਜਰ ਦੇ ਖ਼ਾਸ ਮੁਹੱਬਤ

ਦਰਦਾਂ ਦੇ ਸੰਗ ਵਰਤ ਵਰਤਾਰਾ

ਪੀੜਾਂ ਨੇ ਮੇਰਾ ਮੱਲਿਆ ਕਮਰਾ

ਗ਼ਮਾਂ ਨੇ ਮੱਲ ਲਿਆ ਚੁਬਾਰਾ

ਕਮਰਾ=ਦਿਲ

ਚੁਬਾਰਾ=ਦਿਮਾਗ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

*ਸ਼ਿਕਾਇਤ *

ਕਿਉਂ ਨੈਣ ਨਿਮਾਣੇ ਭੁਗਤਣ ਸਜਾਵਾਂ
ਆਵਣ ਕਿਉਂ ਬੁਲਾਂ ਤੇ ਹੌਕੇ ਹਾਵਾਂ
ਗੁਨਾਹ ਤਾਂ ਕਰੇ ਦਿਲ ਕਿਸੇ ਦਾ
ਗ਼ਮ ਸਾਗਰ ਵਿੱਚ ਗੋਤੇ ਲਾਵਾਂ
ਚੈਨ ਗੁਆਇਆ ਦਰਦ ਹੰਢਾਇਆ
ਅੱਖੀਆਂ ਲਾਕੇ ਕੀ ਮੈਂ ਪਾਇਆ
ਅਲ੍ਹੜ ਰੁੱਤੇ ਸਿਖਰ ਦੁਪਹਿਰੇ
ਉਮਰਾਂ ਭਰ ਦਾ ਰੋਗ ਲਗਾਇਆ

'ਅੰਜੁਮ'

*****

*ਬਸ ਊਂਈ *&ਕੀ ਆਖਾਂ&^ਰੀਝ^

ਓਹ ਸ਼ਾਮਾਂ ਪੈ ਗਈਆਂ ਬਾਹਰ ਨੂੰ ਆਵੇ ਦਿਲ ਵੇ
ਮੈਂ ਧਰਤੀ ਆਂ ਤੇਰੀ ਮੈਨੂੰ ਸੂਰਜ ਬਣ ਕੇ ਮਿਲ ਵੇ
ਕਈ ਜੁੱਗਾਂ ਦੇ ਵਿਛੜੇ ਆਂ ਇਨਾਂ ਹੀ ਯਾਦ ਮੈਨੂੰ
ਇਉਂ ਦੋਵੇਂ ਮਿਲ ਜਾਈਏ ਅੰਬਰ ਜਾਵੇ ਹਿਲ ਵੇ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਮੈਂ ਬੰਜਰ ਹੋ ਗਈ ਆਂ ਮੇਰਾ ਸੀਨਾ ਫਟਿਆ ਨਾਂ
ਇਹ ਕਾਲਜਾ ਠਰ ਜਾਵੇ ਤੂੰ ਬਾਰਿਸ਼ ਬਣ ਕੇ ਆ
ਉਸ ਪਿਆਰ ਨਿਸ਼ਾਨੀ ਨੂੰ ਮੈਂ ਸਾਂਭ ਕੇ ਰਖਾਂਗੀ
ਇਕ ਛੋਟਾ ਜਿਹਾ ਪੌਦਾ ਤੂੰ ਇਸ ਦੇ ਵਿੱਚ ਉਗਾ
'ਅੰਜੁਮ '

*****

*ਬਸ ਊਂਈ *&ਕੀ ਆਖਾਂ&^ਰੀਝ^

ਚੱਲ ਮਾਹੀਆ ਚੱਲ ਓਥੇ ਚਲੀਏ
ਜਿੱਥੇ ਹੋਰ ਵੀ ਕੋਈ ਨਾ ਹੋਵੇ
ਇਕ ਤੂੰ ਹੋਵੇਂ ਇਕ ਮੈਂ ਹੋਵਾਂ
ਠੰਡਢੀ ਜਿਹੀ ਕੋਈ ਛਾਂ ਹੋਵੇ
ਨਿੰਮੀ ਨਿੰਮੀ ਲੋਅ ਚੰਦ ਦੀ ਹੋਵੈ
ਤਾਰਿਆਂ ਦਾ ਗਰਾਂ ਹੋਵੈ
ਚੱਲ ਮਾਹੀਆ ਚੱਲ ਓਥੇ ਚਲੀਏ
ਜਿੱਥੇ ਹੋਰ ਵੀ ਕੋਈ ਨਾ ਹੋਵੇ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

^ਵਜੂਦ^

ਇਹ ਜੰਗਾਂ ਇਹ ਝਗੜੇ ਝੇੜੇ
ਇਹ ਬੰਦਿਆ ਤੂੰ ਆਪ ਸਹੇੜੇ
ਫੋਕੀ ਆਕੜ ਜੇ ਛੱਡ ਦੇਵੇਂ
ਤਾਂ ਰੱਬ ਤੇਰੇ ਸਭ ਤੋਂ ਨੇੜੇ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਇਕ ਨੁਕਤੇ ਨਾਲ ਗੱਲ ਮੁਕਾਈਏ
ਇਕ ਨੁਕਤੇ ਨਾਲ ਬਾਤਾਂ
ਨਾ ਦਿਨੇ ਹੀ ਝੁਰਦੇ ਰਹੀਏ
ਨਾ ਨੀਂਦਰ ਉੱਡੇ ਰਾਤਾਂ
ਨਾ ਪੜ੍ਹੀਏ ਕੋਈ ਪੋਥੀ ਪੁਸਤਕ
ਨਾ ਕਰੀਏ ਪਾਸ ਜਮਾਤਾਂ
ਨਾ ਤਾਂ ਕੋਈ ਕਲਮ ਘਸਾਈਏ
ਨਾ ਫੜ੍ਹੀਏ ਹੱਥ ਦਵਾਤਾਂ
ਢਾਈ ਅੱਖਰ ਪ੍ਰੇਮ ਦਾ ਨੁਕਤਾ
ਜਾਪੇ ਵਾਂਗ ਸਬਾਤਾਂ
'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਆ ਸੱਜਣਾ ਗਲ ਲੱਗ ਕੇ ਰੋਈਏ

ਦੋਵੇਂ "ਮੈਂ" ਨੂੰ ਮਾਰ ਮੁਕਾਈਏ

ਹਸਤੀ ਦੋਹਾਂ ਦੀ ਮਿਟ ਜਾਵੇ

ਦੁੱਧ ਪਾਣੀ ਹੋ ਜਾਈਏ

ਤੈਨੂੰ ਸੇਕਾ ਜੇਕਰ ਲੱਗੇ

ਮੈਂ ਪਹਿਲਾਂ ਉੱਡ ਜਾਵਾਂ

ਪਿਆਰ ਨਾਲ ਜੇ ਫਿਰ ਬੁਲਾਵੇਂ

ਖਿੜੇ ਮੱਥੇ ਰਲ ਜਾਵਾਂ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

*ਬਸ ਉਂਈ *&ਕੀ ਆਖਾਂ&^ਤਲਬ^

ਜਿਹੜੀ ਗਲੀ ਮੇਰਾ ਪ੍ਰੀਤਮ ਵਸਦਾ
ਉਹੀ ਹਰੀਆਂ ਭਰੀਆਂ
ਬਿਨ ਉਸ ਮਾਹੀ ਜ਼ਿੰਦਗੀ ਦੀਆਂ
ਸਾਹਾਂ ਡਰੀਆਂ ਡਰੀਆਂ
ਜਾਵੋ ਨੀ ਕੋਈ ਮੇਲ ਕਰਾਵੋ,
ਰੀਝਾਂ ਹੋਵਣ ਭਰੀਆਂ ਭਰੀਆਂ
ਉਸ ਸਾਜਣ ਨਾਲ ਮੁਹੱਬਤਾਂ 'ਅੰਜੁਮ '
ਕਰਦਾ ਖਰੀਆਂ ਖਰੀਆਂ

*****

*ਬਸ ਊਂਈ *&ਕੀ ਆਖਾਂ&^ਹੁਣ ਸ਼^

ਕਿਸ ਗੱਲ ਦੀ ਆਕੜ ਓ ਸਜੱਣਾ

ਨਾ ਕੁੱਝ ਮੈਥੋਂ ਤੂੰ ਲੈਣਾ ਨਾ ਤੈਥੋਂ ਮੈਂ ਲੈਣਾ

ਧੌਣ ਸਿੱਧੀ ਰੱਖ ਕੇ ਟੁਰਿਆ ਕਰ

ਕੁੱਬਾ ਤੂੰ ਹੋ ਜਾਣਾ ਕੁੱਬ ਮੇਰੇ ਵੀ ਪੈ ਜਾਣਾ

ਵਕਤ ਆਖਿਰੀ ਚਾਰਾਂ ਦੇ ਮੋਢਿਆਂ ਤੇ ‘ਅੰਜੁਮ ‘

ਚੜ੍ਹ ਤੂੰ ਵੀ ਪੈ ਜਾਣਾ ਤੇ ਮੈਂ ਵੀ ਪੈ ਜਾਣਾ

*****

ਯਾਰ ਮੇਰੇ ਦਾ ਦਰਜਾ ਉੱਚਾ
ਰਹਾਂ ਮੈਂ ਨੀਵਾਂ ਨੀਵਾਂ
ਉਸ ਦੀ ਨਿਗਾਹ ਦਾ ਅੰਮ੍ਰਿਤ
ਰੱਜ ਰੱਜ ਕੇ ਮੈਂ ਪੀਵਾਂ
ਦੁਨੀਆਂ ਦੇ ਦਿੱਤੇ ਜ਼ਖਮਾਂ ਨੂੰ
ਉਸ ਦੀ ਮੇਹਰ ਨਾਲ ਮੈਂ ਸੀਵਾਂ
ਮੇਰਾ ਯਾਰ ਹੈ ਬੰਸੀ ਵਾਲਾ
ਸਿਫਤਾਂ ਕਰ ਕਰ ਜੀਵਾਂ
ਕੀ ਕੀ ਕਰਾਂ ਮੈਂ ਸਿਫਤ ਉਸਦੀ
'ਅੰਜੁਮ' ਸਦਕੇ ਥੀਵਾਂ

*****

^ਬਾਗ^

ਕੰਡਿਆਂ ਵਾਂਗ ਕੀ ਜੀਣਾ ਬੰਦਿਆ
ਜੋ ਸਭੱਣਾਂ ਨੂੰ ਰੜਕਣ
ਫੁੱਲਾਂ ਵਾਂਗਰ ਜੀ ਲੈ ਬੰਦਿਆ
ਸ਼ਾਮ ਨੂੰ ਹੀ ਰੁਕ ਜਾਏ ਧੜਕਣ

'ਅੰਜੁਮ '

*****

ਸਜੱਣਾਂ ਤੋਂ ਕਦੇ ਮੂੰਹ ਨਾ ਵੱਟੀਏ
ਤੇ ਮੈਂ ਨੂੰ ਮਾਰ ਮੁਕਾਈਏ
ਸਜੱਣਾਂ ਨਾਲ ਨਾ ਗੁੱਸੇ ਹੋਈਏ
ਤੇ ਵਾਰੋ ਵਾਰ ਮਨਾਈਏ
ਮੁੱਠੀ ਬੰਦ ਸੀ ਲੈਕੇ ਆਏ
ਤਲੀਆਂ ਖੋਲ ਕੇ ਜਾਣਾ
'ਅੰਜੁਮ ' ਜੱਗ ਤੋਂ ਕੀ ਲੈ ਜਾਣਾ
ਦਿਲਾਂ 'ਚੋਂ ਵੈਰ ਮੁਕਾਈਏ।

*****

ਟੁੱਟੇ ਸੁਫਨੇ ਖਿਲਰੀ ਦੁਨੀਆ
ਹਾਏ ਰੱਬਾ ਵੇ ਇਹ ਕੀ ਹੋ ਗਿਆ
ਹਾਏ ਰੱਬਾ ਵੇ ਇਹ ਕੀ ਹੋ ਗਿਆ (2)
ਫੁੱਲਾਂ ਦੀ ਵਾਦੀ ਦੇ ਵਿੱਚ
ਘਰ ਸੀ ਸੋਹਣਾ ਪਾ ਲਿਆ ,
ਮੇਰਾ ਮਾਹੀਆ ਅੱਗੇ ਪਿੱਛੇ
ਬਾਹਾਂ ਦਾ ਘੇਰਾ ਪਾ ਰਿਹਾ,
ਬਾਹਾਂ ਦਾ ਘੇਰਾ ਪਾ ਰਿਹਾ,।
ਨੀਂਦਰ ਖੁੱਲੀ ਫਿਰ ਸੀ ਇਕੱਲੀ
ਦਿਲ ਵੀਰਾਨੇ 'ਚ ਰਹਿ ਗਿਆ
ਦਿਲ ਵੀਰਾਨੇ 'ਚ ਰਹਿ ਗਿਆ
ਟੁੱਟੇ ਸੁਫਨੇ......

*****

ਮੇਰੇ ਖਿੱਲਰ ਗਏ ਨੇ ਅਲਫਾਜ਼
ਕਿਵੇਂ ਮੈਂ ਸਮੇਟਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਕੋਈ ਦੱਸੋ ਮੈਨੂੰ ਇਸ ਦਾ ਇਲਾਜ
ਕਿਵੇਂ ਮੈਂ ਸਮੇਟਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਕਿਸੇ ਦੇ ਖਿਆਲਾਂ ਨੇ ਤਰਥੱਲੀ ਜਿਹੀ ਮਚਾਈ ਐ
ਤਰਥੱਲੀ ਜਿਹੀ ਮਚਾਈ ਐ
ਮੇਰੀਆਂ ਰਾਤਾਂ ਦੀ ਨੀਂਦ ਵੀ ਉੜਾਈ ਐ
ਨੀਂਦ ਵੀ ਉੜਾਈ ਐ
ਸਾਰੀ ਰਾਤ ਮੈਨੂੰ ਆਉਂਦੇ ਨੇ ਖ਼ੁਆਬ
ਕਿਵੇਂ ਮੈਂ ਉਲੀਕਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਕਦੇ ਬੱਦਲਾਂ 'ਚ ਉਹੀ ਮੂਰਤ ਜਿਹੀ ਬਣਦੀ
ਮੂਰਤ ਜਿਹੀ ਬਣਦੀ
ਸੁਫਣਿਆਂ 'ਚ ਸੋਹਣੀ ਸੂਰਤ ਜਿਹੀ ਬਣਦੀ
ਸੂਰਤ ਜਿਹੀ ਬਣਦੀ
ਕੀਹਨੂੰ ਜਾਕੇ ਸੁਣਾਵਾਂ ਮੈਂ ਇਹ ਹਾਲ
ਕਿਵੇਂ ਮੈਂ ਲਪੇਟਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ
ਮੇਰੇ ਖਿੱਲਰ ਗਏ ਨੇ ਅਲਫਾਜ਼
ਕਿਵੇਂ ਮੈਂ ਸਮੇਟਾਂ ਇਨ੍ਹਾਂ ਨੂੰ

*****

ਤੇਰੇ ਨਾਲ ਪੁਰਾਣੀ ਪਛਾਣ ਜੋ ਏ
ਭੈੜਿਆ ਐਵੇਂ ਨਾ ਸ਼ਰਮਾਇਆ ਕਰ
ਅੱਖਾਂ ਨੀਵੀਆਂ ਕਰ ਕੇ ਲੰਘ ਜਾਣੈ
ਕਦੇ ਤਾਂ ਅੱਖੀਆਂ ਮਿਲਾਇਆ ਕਰ
ਦਿਲ ਦੇ ਦਰਵਾਜੇ ਤੇਰੇ ਲਈ ਖੁੱਲੇ ਨੇ
ਕਦੀ ਇੱਧਰ ਵੀ ਤੇ ਗੇੜਾ ਲਾਇਆ ਕਰ
ਦਿਲ ਦਰਿਆ ਸਮੁੰਦਰੋਂ ਡੂੰਘਾ ਹੁੰਦੈ
ਮੇਰੇ ਦਿਲ ਵਿੱਚ ਤਾਰੀਆਂ ਲਾਇਆ ਕਰ

ਇੰਨਾ ਗੁੱਸਾ ਗਿਲਾ ਵੀ ਠੀਕ ਨਹੀਂ
ਕੋਈ ਮਨਾਵੇ ਤਾਂ ਮੰਨ ਵੀ ਜਾਇਆ ਕਰ
ਕਿਸੇ ਦੀ ਭਾਵਨਾ ਨੂੰ ਆਪਣੀ ਸਮਝ
ਦਿਨ ਰਾਤ ਨਾ ਉਹਨੂੰ ਸਤਾਇਆ ਕਰ
ਦਿਲ ਦੀ ਧੜਕਣ ਨਾ ਕਿਧਰੇ ਰੁਕ ਜਾਵੇ
'ਅੰਜੁਮ' ਇੰਨਾ ਨਾ ਤੜਪਾਇਆ ਕਰ
ਜੇ ਇਹ ਸਭ ਕੁੱਝ ਨਹੀਂ ਕਰ ਸਕਦਾ
ਫਿਰ ਯਾਦ ਵੀ ਕਦੇ ਨਾ ਆਇਆ ਕਰ।

*****

ਨਵਾਂ ਜਮਾਨਾ

ਸਿਰ ਤੋਂ ਚੁੰਨੀ ਗਲੋਂ ਦੁਪੱਟਾ
ਉੱਡ ਗਿਆ ਉੱਡ ਗਿਆ ਉੱਡ ਗਿਆ
ਮੱਥੇ ਬਿੰਦੀ ਮਾਂਗ ਸਿੰਧੂਰ
ਔਹ ਗਿਆ ਔਹ ਗਿਆ ਔਹ ਗਿਆ

*****

&ਰੂਹ ਨਾਲ ਪਿਆਰ&

ਮੇਲਾ ਮੇਲਾ ਕਰਦੀ ਏਂ ਤੂੰ
ਭਰਿਆ ਮੇਲਾ ਛੱਡ ਜਾਣਾ
ਪਿੰਜਰਾ ਖਾਲੀ ਹੋ ਜਾਣਾ
ਪੰਛੀ ਵਿੱਚੋਂ ਉੱਡ ਜਾਣਾ
ਜੋ ਬੋਚ ਬੋਚ ਕੇ ਰੱਖਦੀ ਏਂ
ਦੇਹ ਨੇ ਸੁਆਹ ਹੋ ਖਿੰਡ ਜਾਣਾ
ਆਪਣੀ ਗਲੀਆਂ ਛੱਡ ਕੇ 'ਅੰਜੁਮ '
ਪਤਾ ਨਹੀਂ ਕਿਹੜੇ ਪਿੰਡ ਜਾਣਾ

*****

ਸੱਚ ਹਮੇਸ਼ਾਂ ਲੁਕ ਲੁਕ ਬਹਿੰਦਾ
ਝੂਠ ਵਿਕੇਂਦਾ ਬਜਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ
ਨਕਲੀ ਖੁਸ਼ਬੂ ਘਰ ਘਰ ਉੱਡੇ
ਲੁਕਦੀ ਫਿਰੇ ਬਹਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ
ਕੋਲੇ ਕੋਈ ਮਤਲਬ ਨੂੰ ਬਹਿੰਦਾ
ਰਿਸ਼ਤੇ ਬਣੇ ਵਪਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ
ਚੁੰਨੀ ਵੱਟ ਭੈਣਾਂ ਲੱਭਣ ਨਹੀਂ
ਨਹੀਂ ਪੱਗ ਵੱਟ ਯਾਰ ਵੇ ਸਜਣਾ

*****

ਤੈਨੂੰ ਮੈਰੇ ਨਾਲ ਕੋਈ ਸ਼ਿਕਵਾ ਜੋ ਏ
ਖੁੱਲ ਕੇ ਮੈਨੂੰ ਸੁਣਾਇਆ ਕਰ
ਐਵੇਂ ਮੂੰਹ ਵੱਟ ਕੇ ਜੋ ਬਹਿ ਰਹਿਣੈ
ਕਦੀ ਹਸਿੱਆ ਕਰ ਹਸਾਇਆ ਕਰ
ਦੁੱਖ ਵੰਡਿਆ ਘਟਦਾ ਏ
ਸੁੱਖ ਵੰਡਾਇਆਂ ਵਧਦਾ ਏ
ਦੁੱਖ ਸੁੱਖ ਸਾਂਝਾ ਕਰਿਆ ਕਰ
ਦਿਲ ਦਾ ਹਾਲ ਸੁਣਾਇਆ ਕਰ

*****

ਧਰਤੀ ਹੇਠਲਾ ਬਲਦ ਹੁਣ
ਬਣ ਗਿਆ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਬੋਝ
ਅੱਖਾਂ ਵਿਚ ਘਸੁੰਨ ਦੇ ਦੇ
ਕੱਲਾ ਬੈਠ ਕੇ ਰੋਂਦਾ ਰੋਜ।

ਧਰਤੀ ਹੇਠਲਾ ਬਲਦ ਹੁਣ ਤਾਂ
ਬਣਿਆ ਧਰਤੀ ਉੱਤੇ ਬੋਝ
ਅੱਖਾਂ ਵਿਚ ਘਸੁੰਨ ਦੇ ਦੇ
ਬੈਠ ਕੇ ਕੱਲਾ ਰੋਂਦਾ ਰੋਜ।

*****

ਕੋਈ ਵਕਤ ਸੀ ਹੁੰਦੇ ਸਨ ਯਾਰੋ ਕਸਮੀ ਰਿਸ਼ਤੇ
ਨੇਕੀ ਵਾਲੇ ਨਿਭਾ ਲੈਂਦੇ ਸੀ ਯਾਰੋ ਧਰਮੀ ਰਿਸ਼ਤੇ
ਖੁੱਲ ਕੇ ਮਿਲਦੇ ਹੋ ਗਏ ਸ਼ਰਮੋ ਸ਼ਰਮੀ ਰਿਸ਼ਤੇ
ਕੀ ਮਾਹੌਲ ਬਣ ਗਿਆ ਹੋ ਗਏ ਰਸਮੀ ਰਿਸ਼ਤੇ
ਜਾਂ ਫਿਰ ਥੋੜੇ ਜਿਹੇ ਕਿਰਿਆ ਕਰਮੀ ਰਿਸ਼ਤੇ

*****